NEHRU BAL PUSTAKALAYA

बहुत दिन हुए . . .

(भाग 1)

मीठी चोक्सी तथा पी. एम. जोशी





नेहरू बाल पुस्तकालय

बहुत दिन हुए . . . (भाग 1)

मीठी चोक्सी तथा पी. एम. जोशी

चित्रकार : पुलक विश्वास अनुवादिका : शुभा वर्मा



नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

ISBN 81-237-1092-5
पहला संस्करण : 1972
बारहवीं आवृत्ति : 2006 *(शक 1928)*

Once Upon a Time—Part I *(Hindi)*

रु. 14.00

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, ए-5 ग्रीन पार्क
नई दिल्ली-110 016 द्वारा प्रकाशित

हीरप और उसके दोस्त

मोहनजोदड़ो शहर । दोपहर के तत्काल बाद का समय । ईंटों से बने हुए मकानों की सपाट छतों पर मई का चिलचिलाता सूरज चमक रहा था। मकानों में खिड़कियाँ नहीं थीं । सारे दरवाज़े बीच के आँगन में खुलते थे। यहाँ बैठकर स्त्रियां सब्ज़ी काटतीं, मसाले कूटतीं, खाना बनातीं, बर्तन साफ़ करतीं और, जब घर का काम खत्म हो जाता तो गपशप करतीं, सूत काततीं। आँगन के एक कोने में एक चौक बना हुआ था । यहाँ बच्चे तरह-तरह के खेल खेलते रहते ।

सूरज की तेजी अब और भी बढ़ गयी थी । आंगन में भी छाया नहीं रही थी । मुद्राशिल्पी विरोचन अपने कारखाने में एक चटाई बिछाकर सो गया था । उसकी पत्नी भी झपकी ले रही थी । सुबह का खाना बनाते-बनाते वह थक गयी थी । उसने आज रसेवाली तरकारी, चावल और जौ की रोटियाँ बनायी थीं । हमेशा की तरह खाना खाने से पहले सारे परिवार ने स्नान किया था। गर्मियों में भी वहाँ पानी की कमी नहीं रहती थी। नगर एक नदी के किनारे बसा हुआ था। आज उस नदी को हम सिंधु नदी के नाम से जानते हैं।

बड़े लोग सो गये थे, लेकिन बच्चे जाग रहे थे। विरोचन का छोटा बेटा हीरप पिता के कारखाने में कुछ ढूंढ़ रहा था। कारखाने में सफेद रंग के पत्थर के ढेरों टुकड़े पड़े हुए थे । पत्थरों को काट-काट कर विरोचन सपाट, चौकोर और आयताकार टुकड़े बनाया करता था । इन टुकड़ों पर वह तरह-तरह के जानवरों की तस्वीरें खोदता; तस्वीरों के नीचे इनमें कुछ न कुछ लिखा होता। उसके बनाये हुए मुहर व्यापारियों के काम आते । इनसे उनके अलग-अलग



यापारों का पता चलता था। शहर के सारे शिल्पी—कुम्हार, सुनार, ईंट बनानेवाले, नाव बनानेवाले, पत्थरों पर खुदाई का काम करनेवाले या कांसे के वर्तन आदि बनानेवाले, सब को विरोचन की ज़रूरत थी, क्योंकि हर आदमी के व्यापार की अपनी अलग मुहर होती थी।

विरोचन की दूकान बड़ी मशहूर थी। अनेक व्यापारी जो विरोचन की चतुर कारीगरी की कीमत चुका सकते थे, उसकी दूकान पर आते थे। विरोचन की खोदी हुई जानवरों की तस्वीरें उन्हें पसंद थीं। उसकी दूकान तरह-तरह की मुहरों से भरी एक छोटा चिड़ियाघर मालूम पड़ती थी। चौड़े मस्तकवाला विशाल हाथी, लंबी सींगों का सुंदर बैल, धारियोंवाला शेर और कुछ ऐसे जानवर भी उसने मुहरों में खोदे थे जो नम और उष्णकटिबंधीय देशों में पाये जाते हैं—जैसे, दलदल में रहनेवाले एक सींग के गैंडे या नदी में रहनेवाले मगर।

पत्थर के बेकार टुकड़ों के ढेर से हीरप ने एक पत्थर उठा लिया, फिर वह तराशनेवाली छेनी ढूंढ़ने लगा। दीवार के किनारे एक कतार में तरह-तरह के औज़ारों से भरे हुए मिट्टी के मर्तबान रखे हुए थे। एक कोने में तांबे के औज़ार अलग रखे थे। आज से पाँच हज़ार वर्ष पहले लोग लोहे का प्रयोग नहीं जानते थे।

हीरप खुदाई का काम शुरु ही करनेवाला था कि उसकी छोटी बहन



ज़ोर से रो पड़ी । उसकी खिलौनेवाली चिड़िया गुसलखाने की नाली में बह गयी थी ।

"रो मत," हीरप ने उसे चुप कराने की कोशिश की । "मैं तुझे दूसरी चिड़िया लादूंगा । कुम्हार का बेटा झंझार मेरा दोस्त है । मैं उसके घर जा रहा हूँ । मेरे साथ चल । हम वहाँ दूसरे खिलौने भी देखेंगे ।"

संदीपन ने भाई का हाथ पकड़ लिया । दोनों कारखाने से निकल कर सड़क पर आ गये । सड़क सँकरी थी, पर सीधी और बिल्कुल साफ । नदी से आती हुई हवा सड़क और उसकी दाहिनी ओर की गलियों से गुज़र रही थी । दोनों बच्चे एक गली में मुड़ गये । कुम्हारों की बस्ती आ गयी जहाँ वे रहते भी थे और काम भी करते थे । उन दिनों सामान रखने के लिए मिट्टी के बर्तनों की बड़ी माँग थी । विरोचन की तरह कुम्हार भी संपन्न शिल्पी माने जाते थे ।

उसी समय झंझार का पिता भी कारखाने से निकला । संदीपन चिल्ला उठी, "मेरी चिड़िया ! देखो मेरी चिड़िया उसने मुंह में दबा रखी है ।" संदीपन के चिल्लाने के साथ ही तेज़ सीटी की आवाज सुनायी पड़ी । दोनों भाई-बहन तेज़ी से झंझार के पास आ गये । झंझार ने अपनी सीटी उन्हें दिखायी । सीटी पकी हुई मिट्टी की एक नली से बनी हुई थी । उसका आकार चिड़िया की तरह था ।

दरवाज़े पर आहट हुई । झेबर खड़ा था । झेबर एक अमीर व्यापारी का भतीजा था । झेबर के चाचा का व्यापार दूर-दूर के देशों के साथ चलता था ।

"मेरे चाचा सुनार के यहाँ से बड़े सुंदर हार लाते हैं, तुम लोगों को देखना चाहिए," उसने डींग मारी । "इन हारों को वह दूसरी नदी की घाटी तक



ले जाते हैं । उस देश का नाम मिस्र है । वहाँ के लोग रेगिस्तान में पत्थर की ऊँची-ऊँची इमारतें बनवाते हैं । वहाँ की स्त्रियाँ सोने के हार बहुत पसंद करती हैं और वहाँ की रानी भी इन्हें पहनती है । ये हार असली होते हैं ।"

"लकड़ी और पत्थर के दानों से बने हुए हार भी कम सुंदर नहीं होते," हीरप और झंझार गुस्से में बोल उठे।

झंझार की माँ बातचीत की आवाज़ सुनकर बाहर आ गयी। उसने एक मामूली-सा सूती कुरता पहन रखा था। उसकी कलाइयों और बाजुओं में काँसे के चूड़े थे। बालों को समेट कर उसने जूड़ा बना रखा था। उसके जूड़े में एक खूबसूरत पिन और कंघी लगी हुई थी। उसकी कमर की करधनी एक सुंदर पिन के सहारे टिकी हुई थी। उसके गले में तराशे हुए पत्थर के गोल और लंबे दानों का हार पड़ा हुआ था।



"हमारे कारीगर अपने हुनर के पक्के हैं," उसने सहज भाव से कहा : "दूसरे देश के अमीर लोगों के लिए वे सोने और क़ीमती पत्थरों के हार बनाते हैं। इन्हें ले जाकर ये बेच आते हैं। हमारे लिए वे पत्थरों और लकड़ी के दानों को तराश कर जो हार बनाते हैं वे भी कम सुंदर नहीं होते।"

झेबर कहता गया, "हमारे चाचा कपडे का व्यापार भी करते हैं। समुद्र के रास्ते से जाते हैं। पंट के बंदरगाह पर जहाज के पहुँचते ही उत्सुक व्यापारियों की भीड़ लग जाती है। वे हमारे गहने और मुलायम सूती कपड़े खरीद लेते हैं। शहर के बड़े लोग हमारे बुने हुए खूबसूरत कपड़े पहनते हैं, ज़िंदगी भर और मरने के बाद भी।"

"तुम कहानियाँ बहुत गढ़ते हो, झेबर," झंझार ने अविश्वास से कहा।

"यह ठीक कह रहा है," हीरप ने टोका। "उन लोगों का रिवाज़ अजीब है। मेरे चाचा कहते हैं कि जब वहाँ कोई बड़ा आदमी मर जाता है तो उसके शव को सुरक्षित रखा जाता है। शव को मुलायम कपड़े में लपेट कर बालू या चट्टान के बीच बड़ी-सी क़ब्र में रख देते हैं।"

अचानक संदीपन ज़ोर से बोल पड़ी, "मैं सोने का हार देखूँगी।"

"लेकिन तुम देख नहीं सकती," झेबर ने कहा। "वे सुनार की दूकान में रखे होते हैं। सोने के हार अमीर लोगों के लिए होते हैं। हमारे चाचा उन्हें बेच देते हैं। इस समय उनके पास एक भी नहीं है।"

"पर यह सोना आता कहाँ से है?" झंझार ने पूछा। "हमारे शहर के आस-पास तो कहीं मिलता नहीं।"

"नाव बनानेवालों के पास जाओ और कपार्दी से पूछो," झांझर की माँ ने कहा। "उसकी नाव अभी-अभी वापस आयी है। चीज़ें कहाँ से आती हैं, कहाँ जाती हैं, यह सब तुम्हें कपार्दी बता देगा।"

"मैं पहले संदीपन को घर छोड़ आऊँ," हीरप बोला।

"उसे मेरे पास छोड़ दो," माँ ने कहा। "झंझार के पिता ने कुछ नये खिलौने बनाये हैं। उनके साथ वह खेलती रहेगी, फिर मैं उसे घर छोड़ आऊँगी। एक पिंजड़े में एक छोटी-सी चिड़िया है; एक गधा है, उसकी रस्सी खींच दो

तो वह अपना सिर हिलाने लगता है । संदीपन को ये खिलौने पसंद आयेंगे ।"

"ठीक है, " संदीपन खुशी से उछलने लगी ।

"अगर आप उसे सड़क के सिरे तक पहुँचा देंगी तो वह घर चली जायेगी," हीरप राज़ी हो गया ।

"मैं पहुँचा दूंगी," माँ ने कहा, "और जब तक वह घर पहुँच नहीं जायेगी, देखती रहूँगी । हमारी सड़कें सीधी हैं । एक सिरे से दूसरे सिरे तक दिखायी पड़ता रहता है ।"

लड़के चले गये । जुलाहों की बस्ती से गुज़रे तो उन्होंने देखा कि करघों से घिरा हुआ जुलाहा कपड़ा बुन रहा था । पास ही उसका लड़का खड़ा, पिता को बुनाई करते हुए देख रहा था । उन्होंने जुलाहे के लड़के को बुलाकर अपने साथ चलने को कहा । वह राज़ी हो गया ।

शहर से बाहर गेहूँ और जौ के खेतों को पार करते हुए वे किसानों की बस्ती से गुज़रे । किसान मिट्टी के घरों में रहते थे । पास ही ईटों की भट्टियाँ थीं । इन खुली भट्टियों में ईटें पकती थीं ।

वे आगे बढ़ते गये । तभी पास की सड़क से एक मोटा-सा लड़का चिल्लाया, "तुम लोग कहाँ जा रहे हो ?"

लड़का पुजारी का बेटा था । उसका नाम बृहद्रथ था । वह लड़कों के साथ हमेशा खेलों में शामिल नहीं हो पाता था क्योंकि उसे दिन में कई बार नहाना पड़ता था । फिर श्लोक रटने पड़ते थे । पिता के काम से उसे बाहर भी जाना पड़ता था ।



आनेवाले त्योहारों की सूचना देने के लिए उसके पिता उसे अक्सर यजमानों के पास भेजते रहते थे ।"

"मैं भी चलूंगा तुम्हारे साथ," बृहद्रथ हाँफ रहा था। "लेकिन तेज़ मत चलना । खाना खाने के बाद तेज़ चलना ठीक नहीं रहता ।"

"क्या ? तुम फिर खा रहे थे ?" लड़कों ने उसे छेड़ा ।

"और क्या ! खाने से पहले मुझे नहाकर श्लोक रटने पड़ते हैं । तब खाना मिलता है । खाने में मुझे देर हो जाती है," बृहद्रथ ने सफ़ाई दी ।

"मुझे लगता है तुमने डट कर खा लिया है । क्या खाया ?" जंजार ने चुटकी ली ।

"मैंने खजूर के अचार के साथ जौ की बारह रोटियाँ खायी हैं," बृहद्रथ ने होठ चटखारते हुए कहा, और फिर हीरप की ओर मुड़कर बोला, "तुम्हारे चाचा, दो नदियों वाले देश, ईराक़ से जो खजूर लाते हैं न, वे मुझे बड़े अच्छे लगते हैं ।" थोड़ी देर रुककर उसने फिर पूछा, "तुम्हारे चाचा तो अब आनेवाले होंगे ?"

हीरप ने हँसकर जवाब दिया, "हाँ, और जो खजूर वह लायेंगे उनमें से तुम्हारा हिस्सा जरुर निकाल लूंगा । बरसात से पहले सारी नावें वापस आ जाती हैं । चाचा भी आते ही होंगे ।"

सब लड़के नदी के किनारेवाले उस मैदान की ओर चल पड़े जहाँ नावें बनती थीं । शहर के व्यापारिक संबंध कई देशों के साथ थे । इसलिए जल और स्थल दोनों मार्गों पर भीड़ लगी रहती थी । बरसात को छोड़कर हर मौसम में नावों का आना-जाना होता रहता था । नावे आकार में बड़ी होती थीं । अगला हिस्सा लहरों पर ऊंचा उठा, तैरता रहता था । कुछ नावों पर पाल



भी होते थे। दिशा का ज्ञान दिन में सूरज और रात में ध्रुव तारे के सहारे किया जाता था। नाविक अपनी नावें समुद्र में किनारे-किनारे ले जाने की कोशिश करते, ताकि ज़मीन दिखायी पड़ती रहे, क्योंकि कभी-कभी कई दिनों तक बदली छायी रहती थी। न सूरज का पता चलता था, न ध्रुव तारे का। ऐसी हालत में भटक जाने का डर बराबर बना रहता था।

नावों के मैदान में लड़कों की भेंट कपार्दी से हो गयी। कपार्दी नावों का मालिक था। स्वभाव से बड़ा सहज। वह दूर-दूर तक घूम आया था और बहुत कुछ जानता था। उसने लड़कों को दूसरे देशों के बारे में बताया, खूबसूरत चीज़ें कहाँ से आती हैं, कहाँ जाती हैं। उसने बताया, "सोना दक्षिण-पूर्व (आज का मैसूर) से आता है, हरे रंग के सुंदर पत्थर दक्षिण से आते हैं। चमकीले नीले पत्थरों के लिए कारवाँ को सुदूर उत्तर (अफ़गानिस्तान) की यात्रा का जोखिम उठाना पड़ता है। बड़े-बड़े भालू और दूसरे खूंखार जंगली जानवरों से भरे पहाड़ों को पार करना पड़ता है।"

लेकिन वह खुद अपनी नाव में लंबी यात्रा पर जाया करता था—टिगरिस और फ़रात नदियों की घाटी में बसे हुए देश से, जहाँ ईटों के मकान होते थे। उसने बताया कि उससे भी आगे एक तीसरी नदी-घाटी सभ्यता पायी जाती



है (मिस्र की), जहाँ पत्थरों की बड़ी-बड़ी इमारते हैं। शहर और गाँव नीलस (नील) नदी के किनारे-किनारे बसे हैं। पत्थर के बने हुए स्मारकों के लिए मिस्र प्रसिद्ध है। ये इमारतें बस्ती से दूर, रेगिस्तान में बनती हैं।"

"क्या वे शहर हमारे शहरों से अच्छे हैं ?" झेबर ने उत्सुकता से पूछा।

कपार्दी मुस्कुराया। "कुछ अच्छी बातें उन शहरों में हैं, कुछ हमारे शहरों में। पर एक बात है। अपनी यात्रा से लौटकर मैं सीधा हमाम (जनता के लिए बने हुए स्नान-घर) में जाकर देर तक गर्म पानी से नहाता हूँ। नहाने की यह सुविधा मुझे और कहीं नहीं मिलती।"

"तो क्या उन देशों के लोग नहाते नहीं ?" झंझार ने पूछा।

"वहाँ हर घर में गुसलखाने नहीं होते। और हमारी तरह साफ़-स्वच्छ हमाम भी नहीं होते," हीरप गर्व से बोला।

कपार्दी ने आगे बताया, "उन शहरों में गंदा पानी निकालने के लिए ज़मीन के अंदर बनी हुई पक्की नालियाँ भी नहीं हैं। इसलिए सड़कें साफ़ नहीं रहतीं। दो नदियोंवाले देश में ऊँची-ऊँची मीनारें बनी हुई हैं। उनके ऊपर चढ़कर लोग तारों को देखते हैं। नील नदी के किनारे जो देश बसा है उसमें विशाल पत्थर की इमारतें बालू के स्तूपों से ऊँची होती हैं। ऐसा लगता है कि वे हमेशा-हमेशा तक खड़ी रहेंगी। लेकिन हमारे शहरों की बात और है। हमारे शहर दुनिया के सारे शहरों से साफ़ और सुघड़ तरीक़े से बनाये गये हैं।"

रथ-चालक का बेटा और उसके दोस्त

अब हम महाकाव्य युग में हैं, जिसकी घटनाएँ महाभारत में वर्णित हैं। मोहनजोदड़ो और शुरू की सिंधु घाटी-सभ्यता के व्यापारियों और नागरिकों की जगह घुमक्कड़ आर्यों ने लेली है।

आर्य पशुपालक थे। अपने जानवरों के साथ घूमते रहते। जहाँ रहते, वहाँ अनाज भी उगा लेते।

यमुना के किनारे एक उपजाऊ क्षेत्र था, वार्णावत। वहाँ पानी की कोई कमी नहीं थी। आस-पास घने जंगल और अच्छे चारागाह थे। जंगल के छोर पर एक गाँव था, कँटीली झाड़ियों से घिरा हुआ गाँव। मकान के नाम पर मिट्टी और बाँस की झोपड़ियाँ। अपनी माँ और छोटी बहन देवा के साथ भीमक री गाँव में रहता था। भीमक के पिता रथ-चालक थे। कुरुक्षेत्र के महान ें वह मारे गये थे।



दूसरे ग्रामवासियों की तरह भीमक भी सुबह उठ जाता। वह तीरंदाज़ी सीख रहा था और अपने अनेक साथियों से होशियार माना जाता था। कुछ सालों में वह रथ चलाना भी सीख लेगा और हो सकता है रथ बनाने भी लगे। वह पिता के चरण-चिह्नों पर चलकर राजा के सर्वश्रेष्ठ रथ-चालकों में शामिल होना चाहता था।

सूरज ऊपर चढ़ आया था। सुबह का काम समाप्त हो चुका था। भीमक नदी में नहाकर घर खाना खाने आया। खाना खाकर अपने साथियों के साथ खेलने के लिए उसे जंगल की ओर जाना था। चरवाहे, कुम्हार, जुलाहे और सुनार के लड़के उसके साथी थे। वे युद्ध के खेल खेलते थे। भीमक हमेशा उनका नेता बनता था क्योंकि उसके पिता युद्ध में मारे गये थे। भीमक अपनी सैन्य-रचना कई तरह से करता, कभी आयताकार, कभी वर्गाकार, कभी मकड़ी के जाले की तरह व्यूह रचता। रस्सी की सीढ़ियों, भालों और फरसों के साथ किलाबंदी भी कर लेता।

भीमक बड़े मन से इन खेलों के लिए हथियार बनाता। लंबे-लंबे डंडों को छीलकर चिकना करता, फिर उनकी नोक बनाता और भाले की जगह प्रयोग में लाता। छोटे-छोटे डंडों के सिरों पर नुकीले पत्थर बाँधकर फरसा बनाता। फरसा उसका प्रिय हथियार था। चमड़े की रस्सी से वह नुकीला पत्थर डंडे के सिरे पर कस कर बाँध देता। यह बाद में सिकुड़ कर और कस जाता।

कभी-कभी खेल-खेल का युद्ध असली रूप ले लेता जब काले रंग के नाटे-नाटे लड़के सामने आ जाते। भीमक और उसके साथी इन्हें दस्यु-पुत्र कहा करते। दस्यु लोग लंबे गोरे आर्यों से दूर ही रहते। आर्यों ने उन पर विजय पायी थी। वे घने जंगल के बीच में रहते थे। लड़के कभी-कभी आर्य-पुत्रों के सामने आ जाते। उनमें लड़ाई भी होती। कभी-कभी वे साथ-साथ खेलने भी लगते।

भीमक ने जल्दी-जल्दी जौ के लड्डू निगल कर दूध पी लिया।

"आज तुम्हें इतनी जल्दी किस बात की है?" उसकी माँ ने पूछा।

"देवदत्त वापस आ गया है। उससे मिले हुए एक अरसा बीत गया,"



भीमक ने जवाब दिया ।

"देवदत्त तो गुरु देवमित्र शाकल्य का चेला बनकर आश्रम चला गया था न ?" माँ ने फिर पूछा, "मेरा ख्याल है चार साल आश्रम में रहकर आया है । अब तो बहुत कुछ सीख गया होगा ।"

"मुझे अफसोस है कि वह आश्रम चला गया," भीमक बोला । "हममें सब से अच्छा योद्धा वही था ।"

माँ हँसने लगी । "अब जाओ जल्दी, लेकिन लौटने में देर मत करना," कहकर वह थालियाँ धोने लगी ।

लेकिन उसकी छोटी बहन देवी ने बड़ी उत्सुकता से पूछा, "भइया, इतने सारे भाले और लाठियाँ क्यों लेजा रहे हो ?"

"हम एक बड़े युद्ध में जा रहे हैं," भीमक ने कहा । "यह युद्ध भी कुरुक्षेत्र के महान युद्ध के बराबर होगा । कुरुक्षेत्र का महान युद्ध, जिसमें महाराज युधिष्ठिर और उनके भाइयों ने अपने ईर्ष्यालु चचेरे भाई कौरवों को हराया था । वही युद्ध आज फिर होगा । हमारी सेना में एक टुकड़ी हाथियों की होगी । धेनुक की गायें होंगी हाथी । दस्यु-पुत्र कौरव बनेंगे । आज मैं उन्हें दिखा दूंगा कि रथ और घुड़सवार किस तरह हाथियों को तितर-बितर कर देते हैं ।"

"लेकिन यह युद्ध होगा कहाँ ?" देवी की उत्सुकता बढ़ती जा रही थी ।

"वार्णावत के खंडहरों में हम इकट्ठे होंगे जहाँ ईर्ष्यालु कौरवों ने पांडवों के लिए लाख का महल बनवाया था । महल की दीवारें बाहर से रंग-बिरंगे पत्थरों की बनी हुई थीं लेकिन अंदर से उनमें लाख भर दी गयी थी । पांडवों को कुछ शक पड़ गया था और शाम को अँधेरा होते ही वे महल छोड़कर निकल



भागे थे। उसी रात भयानक आग लगी और सारा महल जल कर राख हो गया। अब तो वहाँ कुछ खंडहर ही हैं जहाँ घास और झाड़ियाँ उग आयी हैं। बाकी हिस्सा सपाट मैदान है, युद्ध के लिए बिल्कुल उपयुक्त। पेड़ के कोटरों (खोखले तनों) से अपने-अपने हथियार निकाल कर हम वहीं पहुँचेंगे।"

"मैं भी चलूंगी," देवी मचल पड़ी।

"बड़े-बड़े युद्धों में छोटी लड़कियाँ नहीं जातीं," भीमक ने कहा और तेज़ी से चला गया।

देवी कुछ देर रोती रही। फिर उसने आँसू पोंछ लिये। उसने अपना बर्तन उठाया और पानी भरने नहर की ओर चल पड़ी। पानी के पास एक बड़ा-सा सफेद हिरन खड़ा था। देवी उसे देर तक देखती रही। घर लौटने में उसे काफी देर हो गयी।

देर होने के कारण माँ चिढ़ गयी थी। बोली, "चलो, आ तो गयी। तुम्हारी चाची बीमार है। मैं उसे देखने जा रही हूँ। पड़ोस में हरीती के साथ खेलो। जब मैं आऊंगी तो बुला लूंगी।"

देवी मान गयी, लेकिन मन ही मन उसने तय किया कि हरीती के साथ खेलने वह नहीं जायेगी। वार्णावत के खंडहरों में जाकर देखेगी वहाँ क्या होता है!

माँ के चले जाने पर देवी जंगल की ओर चल पड़ी। आर्यों के बच्चे जंगली जानवरों से नहीं डरते थे। वह अपने भाई से पहले ही वहाँ पहुँच गयी।

भीमक बरगद के कोटरों से अपने हथियार इकट्ठे करता रहा ।

इसी बीच भीमक के दोस्त भी मिल गये थे । जुलाहे का लड़का कलाधन, कुम्हार का लड़का अलिक और सुनार का, जयंत । ज्यादा से ज्यादा जितनी भी गायें इकट्ठी हो सकें, सबको लेकर चरवाहे का बेटा धेनुक युद्ध के मैदान में मिलने वाला था ।

तभी आया देवदत्त। सारे दोस्त खुशी से खिल उठे। उन्होंने एक साथ प्रश्नों की बौछार कर दी—"तुम क्या पढ़ते हो ? क्या शास्त्रों के पंडित हो गये हो ? तुम्हारे दोस्त कौन हैं ? पुराने दोस्तों को भूल तो नहीं गये ?" और इसी तरह के अनेक प्रश्न ।

देवदत्त बड़े प्रेम से मिला । वह पहले से अधिक गंभीर और विचारवान हो गया था । उसने कहा, "इस समय मैं चारों वेदों का अध्ययन कर रहा हूँ । शास्त्रों का पूर्ण पंडित बनने के लिए मुझे अभी आठ साल तक गुरु के पास रहना होगा ।"

"तुम कितने होशियार हो !" अलिक प्रभावित होकर बोला। "ज्ञान की इतनी बातें मेरे दिमाग में घुस ही नहीं सकतीं ।"

"तुम स्वस्थ भी खूब हो गये हो," भीमक भी अपना आश्चर्य छिपा नहीं पाया। "तुम्हारे बाजू मेरे बाजुओं से भी पुष्ट हैं।" अपने दोस्त के बाजू की मांस-पेशियां छूते हुए भीमक ने अफ़सोस ज़ाहिर किया, "तुम कितने अच्छे रथ-चालक और शिकारी बन सकते थे ।"

"कुश्ती का अभ्यास मैंने बहुत किया है," देवदत्त मुस्कुराया। "और जहाँ तक शिकार करने का सवाल है, हमारा आश्रम जंगल के बीचों-बीच है और चारों ओर जंगली जानवर घूमते रहते हैं ।"

"अरे, देवदत्त, तुम्हें शहर के बारे में कुछ भी पता नहीं । वह नगर कितना शानदार है ! कौरवों के मरने के बाद हमारे राजा ने बसाया है," जयंत बोला। इंद्रप्रस्थ का बखान करते वह थकता नहीं था । "शहर के चारों ओर मजबूत दीवारें और गहरी खाइयाँ हैं । अंदर ऊँची-ऊँची मीनारें हैं जहाँ सिपाही पहरा देते हैं । मेरे चाचा वहीं पास के एक गाँव में रहते हैं, अक्सर शहर जाते रहते

हैं। वह गहनों का व्यापार करते हैं, भारी-भारी हार, कंगन, कान के बड़े-वाले। ये गहने स्त्री-पुरुष दोनों पहनते हैं। देखने के लिए वहां कितनी अच्छी-अच्छी जगहें हैं, राजा का महल, जंगली जानवरों के लिए बड़े-बड़े अहाते, न्यायालय, जुआघर...।"

"जुआघर ?" देवदत्त ने आश्चर्य प्रकट किया, "जुए का नतीजा हम देख चुके हैं—लोगों ने कितने-कितने दुख उठाये।"

"युद्ध, शिकार और जुआ—लगता है राजा, राजकुमारों और बड़े-बड़े लोगों के लिए ज़रूरी है," कलाधन बोला। "अब युद्ध समाप्त हो गया है। शाही शिकार की वजह से जंगल में बसे हुए गाँव काफी सुरक्षित हो गये हैं। एक ज़माना था जब तेंदुए और भेड़िये गाँव से बच्चों को उठा ले जाते थे। अब कभी-कभी मवेशी ही गायब होते हैं, आदमी नहीं।"

उस समय घड़ी का काम सूरज करता था। भीमक ने आसमान की ओर देखा और बोला, "हमें अब अपने महान युद्ध के लिए चल देना चाहिए। धेनुक अपने जानवर लेकर युद्ध के मैदान में ज़रूर पहुँच गया होगा।"

"देवदत्त अभी विद्यार्थी है, सैनिक कैसे बन सकता है ?" जयंत ने प्रश्न किया।

"राजा के साथ युद्ध में सारथी का जाना ज़रूरी है," भीमक ने जवाब दिया। "भगवान कृष्ण अर्जुन के सारथी थे। तुम मेरे सारथी बनोगे, देवदत्त ?"

"बनूंगा," देवदत्त मुस्कुराया।

"सबसे पहले तुम अपना हथियार चुन लो," अलिक ने कहा। "भीमक



ने कुछ अच्छे भाले, फरसे और धनुष वनाये हैं।" और उसने बरगद के खोखले तने से सारे हथियार निकाल लिये।

"हथियार बड़े अच्छे हैं," देवदत्त बोला। "लेकिन सारथी कभी युद्ध में लड़ता नहीं। मुझे हथियारों की क्या ज़रूरत है? मेरे लिए मेरी छड़ी काफ़ी है।"

लड़कों ने देवदत्त की छड़ी को उलट-पलट कर देखा। छड़ी काफी मजबूत और वज़नी थी, उसका सिरा नुकीला था।

जव वे युद्ध के मैदान में पहुँचे तो उन्होंने देखा, धेनुक ने पहले से ही जानवरों को एक क्रम में खड़ा कर दिया था। वे जानवर देखने में वड़े भयानक लग रहे थे। उस समय तक जंगल के इन प्राचीन जानवरों को पूरी तरह पालतू नहीं बनाया जा सका था। लड़कों ने देखा, हर जानवर की पीठ पर एक दस्यु-वालक बैठा था जो धेनुक के हिसाब से महावत का काम कर रहा था।

अपने साथियों के साथ भीमक को आता हुआ देखकर इन महावतों ने एक ऊँची हांक लगाकर अपने हाथियों को आगे बढ़ाया। 'पांडव' रथ-चालक थे। अपने भाले हवा में उठा-उठाकर हुँकारते हुए वे भी आगे वढ़े। दोनों दल आमने-सामने विल्कुल क़रीब आ गये तो जानवरों का समूह एकदम रुक गया। दो भागों में बँटकर जानवरों ने रथ-चालकों को रास्ता दे दिया। रथ-चालक अर्थात् 'पांडव' आगे वढ़े। जानवर तितर-बितर होकर भागने लगे। इसका मतलव था कि 'पांडवों' ने 'कौरवों' की सेना को हरा दिया है।

अचानक जानवरों की भगदड़ के बीच एक दर्दभरी चीत्कार सुनायी पड़ी। एक गाय अपने झुंड से कुछ अलग हो गयी थी। घात लगाये बैठा एक



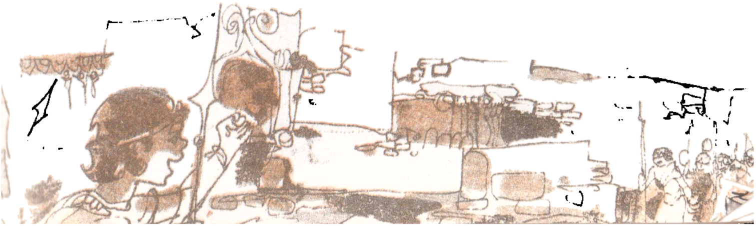
तेंदुआ उस पर झपट पड़ा था। लेकिन लड़के भी जंगलवासी थे। जंगली जानवरों मे उनकी मुठभेड़ होती ही रहती थी। अपने पशुओं की रक्षा करना वे जानते थे। एक साथ मिलकर सब ने ज़ोर की हुँकार भरी और तेंदुए की ओर दौड़ पड़े। धेनुक ने तेंदुए पर बार-बार प्रहार किया। इसी बीच गायों और लड़कों के बीच से रास्ता बनाता हुआ बैलों के झुंड का नेता सांड तेंदुए पर झपटा। सांड के आक्रमण से तेंदुआ तिलमिला उठा। वह अपनी जान लेकर झाड़ियों की ओर भागा। धेनुक बाल-बाल बचा।

लड़के विजय की खुशी से चिल्ला पड़े, तभी एक महीन तेज़ चीख सुनायी पड़ी। लड़के डर गये, जैसे उनका खून जम गया हो। ख़ास तौर पर भीमक बहुत डरा। महीन, तेज़ चीख़ वह पहचान गया। यह आवाज़ उसकी बहन की थी।

तेंदुए के जबड़ों से बची

देवी झाड़ियों के पीछे छिपी बैठी थी। जो कुछ भी हुआ था, उसने देखा था। खत्म हो जाने के बाद वह बाहर आ रही थी। तेंदुए ने झाड़ियों की ओर भागते समय उसे देखा और झपटने ही वाला था कि वह चीख़ पड़ी। भीमक और धेनुक दौड़ पड़े। उनके पीछे बाकी लड़के थे, लेकिन ऐसा लग रहा था कि देवी की जान बचाना असंभव है। अगर लड़के पीछे से तेंदुए पर प्रहार करते तो वह देवी को अपने जबड़ों में दबा लेता।

लेकिन देवदत्त उनसे आगे बढ़ गया। उसकी मोटी छड़ी ऊपर उठी।



तेंदुआ अपने जबड़ों में देवी को दबाने ही वाला था कि देवदत्त ने कसकर उसकी गर्दन पर प्रहार किया ।

देवी के कंधे खून से नहा उठे । तेंदुए की पूंछ ज़मीन छूने लगी । उसका पूरा शरीर थरथराने लगा । फिर वह ज़मीन पर ढेर हो गया । देवी चीख़ पड़ी, लेकिन भय से ।

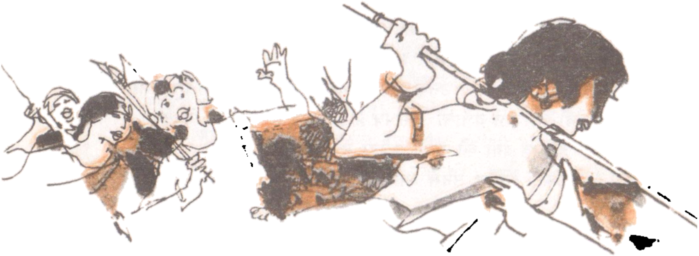
"कहीं चोट आयी ?" भीमक बार-बार पूछने लगा ।

"मुझे पता नहीं," कांपते हुए देवी ने कहा और एकदम रोने लगी ।

देवदत्त पास आ गया । बोला, "मुझे पता है चोट तुम्हें नहीं आयी है । तुमने अपने दुश्मन पर विजय पायी है, इसलिए उसके खून से नहा उठी हो । अपने हारे हुए दुश्मन की ओर गर्व से देखो । उसके सामने अपना भाला ऊपर उठाओ," और अपनी छड़ी उसने देवी के हाथ में पकड़ा दी ।

देवी के आंसू सूख गये । कांपते हुए हाथ से उसने छड़ी ऊपर उठायी ।

"यह खून मेरा है या तेंदुए का ?" उसने पूछा ।



"सोते तक चलो । इसे धो डालो । फिर तुम्हें खुद ही पता चल जायेगा," देदत्त ने जबाब दिया ।

सब लोग पानी के सोते तक गये । देवी ने अपने शरीर पर लगा सारा खून धो डाला । उसे ज़रा भी चोट नहीं आयी थी । भीमक यह देखते ही उसे

डाँटने लगा। देवी फिर रोने लगी।

देवदत्त बोला, "उसे डाँटने की कोई ज़रूरत नहीं है, भीमक। तेंदुए के जवड़े से निकल कर आयी है। इतना ही सबक़ उसके लिए काफ़ी है।" फिर उसने देवी से कहा, "अब फिर अकेले तो नहीं आओगी?"

"नहीं, कभी नहीं," देवी बोली और उसने देवदत्त का हाथ ज़ोर से पकड़ लिया। सब लोग फिर तेंदुए की लाश तक आये।

दस्यु बालकों का घर करीब ही था। इस बीच वे छुरा लेने अपने घर भागे ताकि तेंदुए का चमड़ा उतारा जा सके। इस काम में वे माहिर थे।

दूसरे लड़के मरे हुए तेंदुए को घेरकर खड़े हो गये। देवदत्त की ओर प्रशंसा की दृष्टि से देखकर बोले, "क्या हाथ मारा है! तुम्हें आश्रम में यही सिखाया जाता है? तब चलो हम सब वहीं चलकर पढ़ें-लिखें।"

देवदत्त चुपचाप मुस्कुराया, "एक बार हमारे गुरु ने एक चेले की जान इसी तरह बचायी थी। चेला एक भालू की गिरफ्त में आ गया था," उसने कहा।

"हम इसका चमड़ा उतार लेंगे, फिर तुम उसे पहनना। विजय की निशानी की तरह," धेनुक बोला।

"पहले अपनी गायें देखो, धेनुक," देवदत्त ने कहा। देवी उसके हाथ से लगी, मरे हुए तेंदुए को देखकर फिर काँपने लगी थी। देवदत्त उससे बोला, "चलो देवी, चलकर अब हम बेचारी गाय को देखते हैं। तेंदुए के दाँत और जबड़ों का प्रहार उस पर तुमसे ज्यादा हुआ है।"



गाय दर्द आ.र भय से रँभा रही थी । देवदत्त ने उसे थपथपाया और सहलाता रहा । फिर पानी के पास ले जाकर उसने धीरे-धीरे उसके घाव धोये । गाय का चमड़ा फट गया था और खून बह रहा था लेकिन कोई गहरी चोट नहीं आयी थी ।

"आक की पत्तियाँ इसके घाव पर रख दें तो दर्द कुछ कम हो जायेगा," देदत्त ने कहा । देवी आक की डालें लायी, उसकी लंबी-लंबी पत्तियाँ तोड़कर घाव पर रख दी गयीं और घास की रस्सी बट कर उससे बाँध दिया गया । फिर उन्होंने ढेर सारी हरी घास लाकर उसके सामने रख दी । जल्दी ही गाय अपना दुख भूल गयी और घास खाने लगी ।

"तुम तो जितने अच्छे शिकारी हो उतने ही अच्छे चरवाहे भी मालूम पड़ते हो," धेनुक ने देवदत्त की प्रशंसा की । "गायों की देखभाल तुम उसी तरह कर सकते हो जैसे मैं करता हूँ ।"

"हमारे आश्रम में ढेर सारे पालतू जानवर हैं," देवदत्त बोला । "हमें उनकी देखभाल करनी पड़ती है । चरागाह बहुत दूर हैं और वहाँ के जंगल ज्यादा घने और ख़तरनाक हैं ।"

"आश्रम में तुम खाते क्या हो ?" जयंत ने पूछा । उसका मन हमेशा खाने की चीज़ों में लगा रहता था । या अपने खाने की बात करता या फिर दूसरे के खाने के बारे में पूछता रहता ।



" जो सब खाते हैं वही हम भी खाते हैं," देवदत्त ने जबाब दिया। " चावल गेहूँ, जौ, दूध, गोश्त, लेकिन गोश्त हम दूसरी चीजों से कम खाते हैं।"

" यह दूध का कमाल है कि तुम इतने ताकतवर हो," अलिक बोला।

" हम दूध, मक्खन, घी और दही खूब खाते हैं, लेकिन तुम लोगों से ज़्यादा हमें उपवास भी तो करना पड़ता है," देवदत्त कहता गया। " मेहनत की जिंदगी जीते हैं इसलिए ताक़तवर हैं।"

अचानक देवी काँपने लगी। उसकी तबीयत ख़राब होने लगी। " देवी को लेकर हमें माँ के पास चलना चाहिए, " देवदत्त ने कहा।

"गाय यह भूल गयी है कि तेंदुआ उसे चीरकर खाने वाला था," अलिक बोला। " लेकिन देवी को उसके खुले हुए जवड़े अव भी याद हैं जो उसे दवाकर बंद होजाने वाले थे।"

"मनुष्य की याददाश्त जानवरों की याददाश्त से ज्यादा होती है। मनुष्य ज़्यादा याद रख सकता है," देवदत्त ने कहा।

जयंत केले के पत्ते में लपेट कर ढेर सारे जौ के लड्डू लाया था। धेनुक ने सारे लड्डू दस्यु वालकों को दे दिये। उन्होंने वायदा किया कि गीदड़ों और लकड़बग्घों के आने से पहले ही वह तेंदुए की खाल उतार लेंगे और सुरक्षित रखेंगे।

सारे लोग घर की ओर चल पड़े। भीमक, अलिक और देवदत्त ने वारी-वारी देवी को गोद में उठाया। देवी उत्तेजना और थकान के मारे सोयी पड़ रही थी। भीमक की माँ के वापस आने से पहले ही वे लोग देवी को लेकर घर पहुँच गयें।

देवी अपनी चटाई पर पड़कर ऊँघने लगी। भीमक की माँ वापस आयी। उसने भीमक के दोस्त देवदत्त का हालचाल पूछा, फिर आश्रम की जिंदगी के वारे में पूछती रही। देवदत्त ने उसे देवी के वारे में वताया कि किस तरह वह तेंदुए के जवड़े से वाल-वाल वची है। आगे उसने कहा, "लेकिन देवी अव अकेले कभी नहीं जायेगी।"

देवी का दिल धड़क रहा था। उसकी नींद खुल गयी थी। उसने सारी



बातचीत सुन ली थी। माँ की ओर वह फटी-फटी आँखों से देखती रही। माँ ने देवी को उठाकर कलेजे से लगा लिया। देवी समझ गयी कि माँ उससे नाराज़ नहीं है।

देवी का डर ख़त्म हो गया। माँ ने उसे माफ़ कर दिया था। अब बातचीत में वह शामिल हो सकती थी।

"धेनुक कल तेंदुए की खाल लायेगा," उसने कहा। "दम्यु बालकों के साथ वह खाल उतारने में लगा हुआ है।" उसे फिर नींद आने लगी थी।

"आपको ज़रूरत हो तो खाल रख लीजिए," देवदत्त ने भीमक की माँ से कहा। "रात में ठंड नहीं लगेगी।"

"नहीं, मुझे रात को बुरे सपने आयेंगे," माँ बोली। फिर उसने देवदत्त से पूछा, "कितने दिन रुकोगे देवदत्त?"

"जब तक मेरे गुरु देवमित्र शाकल्य आश्रम में लौट नहीं आते मैं यहीं रहूँगा। महाराज युधिष्ठिर अश्वमेध करने जा रहे हैं। हमारे गुरु इंद्रप्रस्थ चले गये हैं।

आप तो जानती ही हैं कि अश्वमेध वही कर सकता है जिसकी शक्ति का लोहा पूरी दुनिया मान लेती है। इसमें राजा की ओर से एक घोड़ा छोड़ दिया जाता है। अगर दूसरा राजा चुनौती मान कर उसे पकड़ ले तो

युद्ध होता है। महाराज युधिष्ठिर ने लगभग साल भर पहले एक घोड़ा छोड़ दिया था। साल भर से यह घोड़ा मनमाने राज्यों में विचरण कर रहा है। इसे पकड़ने की हिम्मत किसी ने नहीं की। अब साल पूरा होने को आ गया है। एक महान अश्वमेध यज्ञ होगा। इसके बाद महाराज युधिष्ठिर 'धर्मराज' घोषित कर दिये जायेंगे। इसीलिए मुख्य-मुख्य आश्रमों के गुरु बुला लिये गये हैं। गंगा, यमुना, सोन और गंडक के किनारे रहनेवाले बड़े-बड़े ऋषि भी आजकल राजधानी में बुला लिये गये हैं।"

सोते-सोते देवी ने टोका, "सोने से पहले मैं एक बात बता देना चाहती हूँ। देवदत्त ने मेरी और गाय, दोनों की सहायत की है।"

भीमक हँसा, "हम यह तो जानते थे कि वेदों का अध्ययन करके देवदत्त विद्वान बनेगा, लेकिन यह नहीं जानते थे कि इतना अच्छा शिकारी और पशु-पालक भी बन जायेगा। साथ ही बच्चों की देखभाल करना भी इसे आ जायेगा।"

"यही विद्या है जो वह आश्रम में रह कर सीख रहा है," भीमक की माँ ने स्नेहभरे स्वर में कहा।

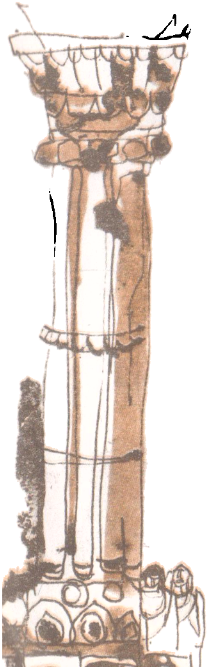
जब कारवाँ पहुँचा

पाटलिपुत्र जानेवाली सड़क पर बने हुए विश्राम-घर में चहल-पहल थी। पूर्व की ओर से एक कारवाँ अभी-अभी पहुँचा था। यह विश्राम-घर मौर्य वंश के तीसरे महान सम्राट अशोक ने बनवाया था। उन्होंने अपने राज्य में अनेक विश्राम-घर स्थान-स्थान पर बनवाये थे।

बौद्ध-धर्म से प्रभावित होकर अशोक ने अपने विशाल साम्राज्य में अनेक परिवर्तन किये। एक स्थान से दूसरे स्थान को जोड़ती हुई अनेक सड़कें बनवायीं। इन सड़कों की वजह से सम्राट और उनके अधिकारी एक स्थान से दूसरे स्थान का दौरा आसानी से कर सकते थे। जनता का सुख-दुख जान सकते थे। यात्रियों और व्यापारियों को भी सुविधा हो गयी थी। जंगल साफ़ कर दिये गये थे। यात्रियों और व्यापारियों को किसी बात का ख़तरा नहीं था। इस क्षेत्र में रहनेवाले लोगों के लिए नयी व्यवस्थाएँ की गयी थीं। इनके रीति-रिवाज गाँव और शहर में रहनेवाले लोगों के रीति-रिवाजों से ज्यादा उदार थे।

विश्राम-घर की देखरेख करनेवाले चौकीदार के परिवार में अलग-अलग क्षेत्र के लोग थे। चौकीदार प्रौढ़, लंबा, तना हुआ सिपाही जैसा लगता था जैसे उत्तर का रहनेवाला हो। उसकी माँ की शक्ल बेटे से बहुत मिलती थी, लेकिन वह बहुत बूढ़ी थी। उसके शरीर पर झुर्रियाँ पड़ी हुई थीं। चौकीदार की पत्नी नाटी और काली थी। सबसे ज्यादा फर्क तो बच्चों में था। दो छोटे





बच्चे (एक लड़का और एक लड़की) एक दूसरे से मिलते-जुलते थे, लेकिन सबसे बड़ी लड़की ज्यादा काली थी। उसके बाल घुंघराले और होंठ मोटे, उभरे हुए थे।

दोपहर का समय था, लेकिन विश्राम-घर भरा हुआ था। जंगली जानवरों के डर से यात्री अँधेरा होने से पहले ही विश्राम-घर में आश्रय ले लेते थे। ताम्रलिपि का एक व्यापारी राजधानी के बाज़ारों की ओर जा रहा था। बैलगाड़ियों पर लदे हुए मसालों के मर्तबान, तरह-तरह की सुगंधि और कपड़ों के थान उसके साथ थे। राजा का एक अधिकारी भी ठहरा हुआ था। उसके साथ एक निरीक्षक, एक अभिलेखपाल (रिकार्ड रखनेवाला) और कई सहायक भी थे। दो यात्री और थे, कंधों पर बाघ की खाल ओढ़े एक सन्यासी जो तीर्थ-यात्रा करने निकला था और बंगाल का एक विद्यार्थी जो विद्योपार्जन के लिए तक्षशिला जा रहा था।

विश्राम-घर के पासवाले कुएँ पर सबने नहाया और छककर खाना खाया, फिर वे आंगन में बैठकर बातें करने लगे। चौकीदार और उसकी बूढ़ी माँ भी पास आकर बैठ गये और उनकी बातें सुनने लगे। व्यापारी पाटलिपुत्र के बाज़ारों के बारे में बता रहा था कि किस तरह चीज़ें दूकानों पर सजी रहती हैं। चौकीदार की पत्नी उधर से गुज़री तो चौकीदार ने उसे बुलाया, "यहाँ आकर माँ के पास बैठो। व्यापारी हमें उत्तर से आनेवाली चीजों के बारे में बता रहा है। चमड़ा, कालीन, कम्बल, चमकीले सूती कपड़े, महंगे रेशम, बर्तन, हथियार और इसी तरह की अनेक चीज़ों के बारे में।"

व्यापारी बोल पड़ा, "और हाथी-दांत की चीज़ें, सोने

के हार, मसाले, तरह-तरह की सुगंधि और सौंदर्य-प्रसाधन ।"

"अभी आयी," चौकीदार की पत्नी बोली। "अभी अभी एक संगतराश आया है । बेचारा बहुत दूर उत्तर से आ रहा है और भूखा भी है ।"

अचानक कोने में बैठा हुआ एक बूढ़ा आदमी बोल पड़ा, "हमारे सम्राट एक योद्धा हैं, उनके पुरखे भी योद्धा थे । फिर भी लोग कहते हैं कि उन्होंने युद्ध बंद कर दिया है । युद्ध न होगा तो शांति की स्थापना कैसे होगी ?"

"लेकिन शांति तो क़ायम है," व्यापारी ने दृढ़ता से कहा। "विदेशी शत्रुओं से हम सुरक्षित हैं । हम पर हमला करने की हिम्मत कोई नहीं करता । सिपाही घर आ गये हैं । पहले ये हमारी बस्तियों से गुजरते थे तो इन्हें खाना खिलाना पड़ता था । सड़कों पर डाकुओं का कोई भय नहीं है । सम्राट के अधिकारी उनके हुक्म का पालन करते हैं । अब हमें उनसे भी कोई ख़तरा नहीं है । जिस नियम-कानून की बात वे जनता को बताते हैं उसका स्वयं भी पालन करते हैं ।"

अभिलेखपाल मुस्कुराया और आगे बोला, "हिसाब-किताब इतनी अच्छी तरह रखा जाता है, उसकी जांच होती रहती है । किसी गलती की गुंजाइश नहीं रहती । सम्राट बार-बार अपने अधिकारियों को समझाते रहते हैं कि प्रेम



और नियम के सहारे शासन करो । आतंक के बल पर नहीं ।"

"दुश्मन बाहर-भीतर कहीं से भी हमला कर सकते हैं, और उनके बाप-दादों की स्थापित की हुई सुरक्षा नष्ट कर सकते हैं," बूढ़ा आदमी बुड़बुड़ाया ।

सन्यासी बोला, "हमारे सम्राट धर्म के सहारे शासन कर रहे हैं, भय या आतंक से नहीं ।"

"सेना कम नहीं की गयी है," अभिलेखपाल ने कहा । "सीमाओं पर सेना अब भी तैनात है । नियम का पालन हो रहा है ।"

सन्यासी कहता गया, "हमारे महान् सम्राट ने घोषित किया है, युद्ध के नगाड़ों का स्थान नियम-कानून की शिक्षा ले लेगी । आदमी के हृदय पर विजय पाना ही सबसे बड़ी विजय है ।"

"इस लिए," व्यापारी बोला, "सम्राट ने चट्टानों और स्तंभों पर नियम खुदवा दिये हैं, ताकि सब लोग अपना कर्त्तव्य समझ लें और नियम का पालन कर सकें । जहाँ भी मैं गया हूँ, सम्राट के संदेश खुदे हुए मिले हैं ।"

"इन संदेशों में," सन्यासी ने कहा, "सम्राट् ने अपने अधिकारियों, कर्मचारियों और आम जनता को धर्म और कर्त्तव्य-पालन का आदेश दिया है ।"



व्यापारी ने सन्यासी को टोका, "हमारे सम्राट ने जिस तपस्वी को गुरु माना है वह पीला वस्त्र पहनते हैं। आप उनके चेले नहीं हैं, फिर आप उनकी वड़ाई क्यों कर रहे हैं?"

अभिलेखपाल बीच में बोल पड़ा, "सम्राट सारे धर्मों का सम्मान करते हैं। उन्होंने करुणामय बुद्ध के प्रसिद्ध शिष्य उपगुप्त से गुरु-मंत्र लिया था। लेकिन सम्राट मानते हैं कि सारे धर्मों में अच्छाइयाँ हैं। धर्म के सहारे वह एकता कायम करना चाहते हैं। आपस में फूट डालना नहीं चाहते।"

तपस्वी ने कहा, "सम्राट ने एक चेतावनी भी खुदवा दी है कि अपने धर्म का प्रचार करते समय दूसरे धर्म की निंदा नहीं होनी चाहिए। नम्रता और सत्कर्मों का प्रचार वह करते हैं।"

"सम्राट जो कहते हैं वह करते भी हैं," चौकीदार बोल पड़ा। "यह उनकी विनम्रता और अच्छाइयाँ हैं जिनके कारण हम सब उन्हें जानते हैं, चाहते हैं। उनके विनम्र शब्द, उनके अच्छे काम, हमारे चारों ओर हैं। यात्री और व्यापारियों के लिए सड़कें हैं। किसानों के लिए सिंचाई के साधन हैं। आदमी और जानवरों के लिए अस्पताल हैं। हर आठ कोस के बाद एक विश्राम-घर है, एक कुआं है। सामान रखने के लिए गोदाम हैं, जगह-जगह पर बरगद और इमली के पेड़ लगाये गये हैं, ताकि यात्रियों को छाया मिल सके। हर गाँव और शहर के बाहर अमराइयां लगी हैं जहां आदमी, पशु-पक्षी आराम कर सकते हैं, बगीचों की छाया में बैठ कर ताजे हो सकते हैं।"

ईरान का संगतराश

इसी समय चौकीदार की पत्नी आखिरी मेहमान को लेकर दाखिल हुई। भरे-पूरे चेहरेवाला लंबा आदमी देखने में मिलनसार और हँसोड़ मालूम पड़ रहा था। चौकीदार की पत्नी कोने में अपनी सास के पास बैठते हुए अपने पति से बोली, "बिबी जानवरों की देखभाल कर रही है, अभी आ जायेगी।"

"आमतौर पर अपने जानवरों की देखभाल मैं खुद करता हूं," आखिरी

मेहमान बोला। "लेकिन वह नन्हीं-सी बच्ची जानवरों को इतने प्यार से खिला-पिला रही थी कि मैंने सोचा चल कर आप लोगों के ही पास बैठा जाय।"

"मेरी बेटी को जानवरों से प्रेम है," चौकीदार ने कहा।

"वह काले बालोंवाली लड़की तुम्हारी बेटी है ?" आश्चर्य से व्यापारी ने पूछा।

"जी हाँ, वह हमारी बेटी है," चौकीदार बोला।

सब लोगों ने आश्चर्य से एक दूसरे की ओर देखा। काली लड़की बिल्कुल जंगली लगती थी।

आखिरी मेहमान ने बड़ी होशियारी से बातचीत का विषय बदल दिया। बोला, "ज़माना गुज़र गया जब हमने अपने घरवालों को देखा था। तुम्हारी लड़की के बराबर की उम्रवाली एक लड़की मेरी भी है। अब मैं घर जाऊँ तो वह मुझे पहचान भी न पाये।"

चौकीदार की पत्नी पुरुषों की बातचीत में कम ही शामिल होती थी। मेहमान की बात सुनकर नम्रता से पूछ बैठी, "आप कहाँ के रहनेवाले हैं ? मैंने समझा था आप विदेशी होंगे, लेकिन आप तो हमारी भाषा अच्छी तरह बोल लेते हैं।"

"मैं ईरान का रहनेवाला हूँ," मेहमान ने जवाब दिया। "इस समय



तक्षशिला में संगतराशी का काम कर रहा हूँ। बरसों पहले जब आपके सम्राट तक्षशिला आये थे तो हम ईरानी संगतराशों की बस्ती से भलीभांति परिचित हो गये थे। बाद में हममें से कुछ लोगों को उन्होंने पत्थर पर खुदाई करने के लिए यहाँ बुला लिया।"

"अभी हम लोग इसी विषय पर बात कर रहे थे," व्यापारी बोला। "हमारे सम्राट ने अपने उपदेश पत्थरों पर खुदवा दिये हैं ताकि उनका फ़रमान सुविधा से जनता तक पहुँच जाय। आप तो जानते ही होंगे ये पवित्र स्तंभ और इन पर खुदे हुए लेख कैसे तैयार किये जाते हैं। आज तक अपनी आवाज़ जनता तक पहुँचाने के लिए किसी राजा ने शिलालेखों का सहारा नहीं लिया था।"

"पत्थरों पर लिखाई, हमारे देश में भी कोई नयी बात नहीं है," ईरानी संगतराश बोला। "हमारे महान बादशाह दैरियस ने अपने शिलालेख ऊँची चट्टानों पर खुदवाये थे।"

"क्या लिखवाया था उन्होंने?" सन्यासी पूछ बैठा।

"अपनी प्रसिद्धि और विजय का इतिहास," संगतराश ने कहा।

"हमारे सम्राट ने अपनी महानता का जिक्र कहीं नहीं किया," सन्यासी बोला। "उन्होंने जनता के कल्याण के लिए अपने संदेश पत्थरों पर खुदवाये हैं। वह जनता की खुशी चाहते हैं। उनका कहना है कि धर्म के अनुसार चलने पर खुशी मिल सकती है। विनम्रता, उदारता, सच्चाई, बड़ों के प्रति आदर, ब्राह्मणों और भिक्षुओं का सम्मान, गरीब और अनाथों की मदद, ये सब धर्म हैं। इस धर्म का पालन करने से आदमी सुखी रह सकता है।"

अभिलेखपाल ने आगे कहा, "जिस तरह एक अच्छी धाय अपनी देखरेख में रहनेवाले बच्चों को पालती-पोसती है, उसी तरह सम्राट की आज्ञा से उनके अधिकारी प्रजा की देखभाल करते हैं। उनकी सहानुभूति जंगली जातियों के साथ भी है, जिनका सभ्य समाज से कोई रिश्ता नहीं।"

चौकीदार की पत्नी की आँखों में आँसू भर आये। उसकी सास ने प्यार से उसका हाथ दबाया, फिर बूढ़ी दादी माँ कोने से बोल पड़ी, "लेकिन वे शब्द लोग समझते कैसे हैं? हम सब पढ़ नहीं सकते, जंगली सीमाओं पर रहनेवाले



तो बिल्कुल नहीं।"

"सम्राट के शिलालेख आम जनता की भाषा में हैं, विद्वानों की भाषा में नहीं," व्यापारी ने कहा।

'और सम्राट के अधिकारी अक्सर लोगों को इकट्ठा करके ये उपदेश पढ़कर सुनाते हैं," अभिलेखपाल कहता गया। "लेकिन हमें अपने संगतराश दोस्त से यह जानना चाहिए कि मीनारों को तराश कर उस पर अक्षर कैसे खोदे जाते हैं।"

"पत्थर दो जगहों से आते हैं," संगतराश ने कहना शुरू किया। "लाल और सफेद चित्तियोंवाले बलुआ पत्थर मथुरा से, और सख्त, हल्के पीले रंग के बनारस के नजदीक चुनार से। बड़े-बड़े पत्थरों को काटकर स्तंभ का मध्य भाग निकाला जाता है। फिर उसे तराशते हैं। तब उस पर पालिश होती है। भारतीय और ईरानी अनेक संगतराश लगे रहते हैं, तब जाकर स्तंभ का मध्य भाग तैयार होता है। इसके बाद पाटलिपुत्र के महल की तरह इन पर फूल-पत्तों की नक्काशी नहीं होती। हमारा सारा हुनर स्तंभ-मध्य का ऊपरी हिस्सा तैयार करने में लगता है। फिर पूरे स्तंभ को चमकाया जाता है। स्तंभ ऐसा लगने लगता है जैसे किसी धातु का बना हो।"

"हमारे भारतीय शिल्पी क्या उसे चमका नहीं सकते ?" व्यापारी ने पूछा।

"यह तो ईरानी शिल्पी की विशेषता है । और ईरानी शिल्पी ही स्तंभ का पशुमुखी शीर्ष बना सकते हैं," अभिलेखपाल ने समझाया। "हमारे भारतीय संगतराशों ने दूसरी उपयोगी चीज़ें बनायी हैं । दूर गिरनार के पास सुदर्शन झील पर बना हुआ बांध अपने में एक नमूना है ।"

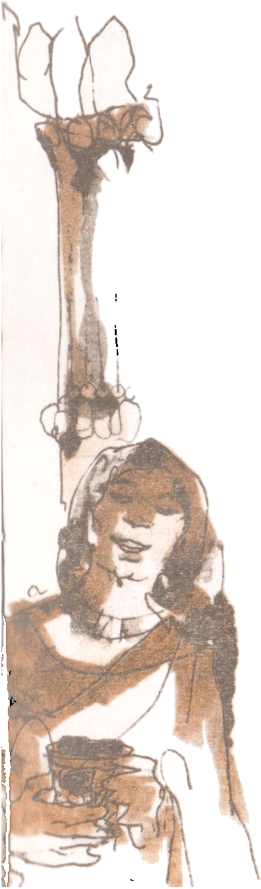
संगतराश फिर बोलने लगा, "शीर्ष बनाने के लिए काफी बड़े पत्थर की जरूरत पड़ती है । भारतीय शिल्पियों ने इसके लिए एक नया तरीक़ा अपनाया है। शीर्ष को रखने के लिए जो आधार वे बनाते हैं, वह एक प्याले की तरह होता है। फिर उसे पल्लवों से सजाया जाता है। लगता है जैसे खूबसूरत, खिला हुआ कमल हो। इसके बाद हमारी सारी कुशलता उन जानवरों को बनाने में लगती है जो शीर्ष पर रखे जाते हैं ।"

"कौन से जानवर ?" चौकीदार की बेटी ने उत्सुकता से पूछा। वह अभी-अभी आकर संगतराश के पास बैठ गयी थी ।

"सिंह, बेटे," संगतराश मुस्कुराया। "तुम्हारे और हमारे दोनों देशों में जाना-पहिचाना जानवर, जंगल का राजा सिंह। शीर्ष पर बैल भी अच्छा लगता है और घोड़ा भी । सब से बढ़िया और मशहूर स्तंभ सारनाथ का है । शीर्ष पर चार सिंह एक दूसरे की ओर पीठ किये बैठे हैं, जैसे दुनिया को चारों दिशाओं से देख रहे हों ।"

"जब स्तंभ-मध्य और शीर्ष बनकर तैयार हो जाता है," संगतराश कहता





गया, "तब हम स्तंभ-मध्य को ज़मीन पर अच्छी तरह टिका कर खड़ा कर देते हैं और उसके ऊपर शीर्ष रख देते हैं।"

"स्तंभ-मध्य पर शीर्ष टिका कैसे रहता है?" चौकीदार ने पूछा।

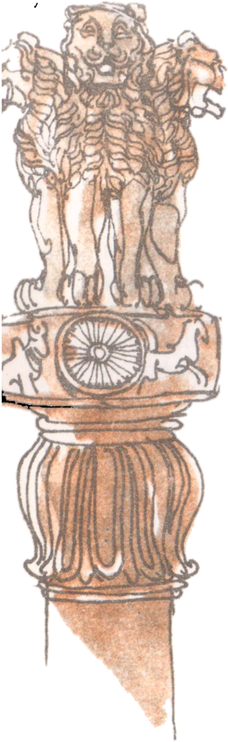
"स्तंभ-मध्य पर शीर्ष को टिकाकर तांबे के पेंच से कसकर उसे मज़बूत बना देते हैं," संगतराश ने उत्तर दिया।

"भारतीय शिल्पी जिस जानवर को तराशना पसंद करते हैं, वह हाथी है," सन्यासी बीच में ही बोल पड़ा। "मैंने धौली की चट्टान पर खुदा हुआ एक ऐसा हाथी देखा है कि लगता है जंगल से निकलकर आ रहा है और शाही फरमान की ओर इशारा करता हुआ वहाँ खड़ा है। सम्राट के शिला-लेखों की ओर जनता का ध्यान आकर्षित करने के लिए ही इसे तराशा गया है।"

"सम्राट् के संदेश आप तक कैसे पहुँचते हैं?" विद्यार्थी ने सवाल किया। "और इतने बड़े-बड़े स्तंभों पर अक्षरों की खुदाई आप कैसे करते हैं?"

"सम्राट के आदेश बारीक सूती कपड़ों पर लिख कर पाटलिपुत्र से आते हैं," अभिलेखपाल ने विद्यार्थी को समझाया।

"फिर हम संगतराश चट्टानों और स्तंभों पर अक्षर उतार कर खोद देते हैं," संगतराश कहता गया। "बड़ी मेहनत और धैर्य का काम होता है, क्योंकि चट्टानों की यह खुदाई सदियों बनी रहती



है। संगतराश जिन अक्षरों को खोदता है उन्हें कभी-कभी पढ़ भी नहीं पाता।

"मुझे पता है आपकी लिखाई बाईं ओर से शुरू होकर दाईं ओर जाती है। हमारे देश में दाईं ओर से बाईं ओर लिखा जाता है। लेकिन आप विद्यार्थी हैं, ज्ञान की खोज में निकले हैं, शिलालेखों की भाषा तो आपको आती होगी।"

"हमारे मित्र जिस भाषा का ज्ञान प्राप्त करने निकले हैं वह वेदों की भाषा, संस्कृत है। संस्कृत विद्वानों की भाषा है," व्यापारी बोला। "ये शिला-लेख जनता की भाषा 'प्राकृत' में हैं। हमारे कृपालु सम्राट चाहते हैं कि उनके उपदेश उनकी सारी प्रजा समझ सके।"

"मुझे भी जनता की वह भाषा आती है जिसका प्रयोग शिला-लेखों में किया गया है," विद्यार्थी ने कहा। "ब्राह्मी एक ऐसी लिपि है जिसे विद्वान और लिपिक दोनों जानते हैं।"

"मैंने सुना है कि कुछ शिला-लेखों में एक दूसरी लिपि का प्रयोग किया गया है," अभिलेखपाल बोला। "वह लिपि जो उत्तर-पश्चिम सीमा पर प्रचलित है, जिसे 'खरोष्ठी' कहते हैं। यह दाईं ओर से बाईं ओर पढ़ी जाती है।"

"आप सब लोग लिखना-पढ़ना जानते हैं ?" चौकीदार की बेटी ने सवाल किया।

"अधिकारियों और व्यापारियों के लिए लिखना ज़रूरी होता है क्योंकि उन्हें हिसाब-किताब रखना पड़ता है," अभिलेखपाल ने जवाब दिया।

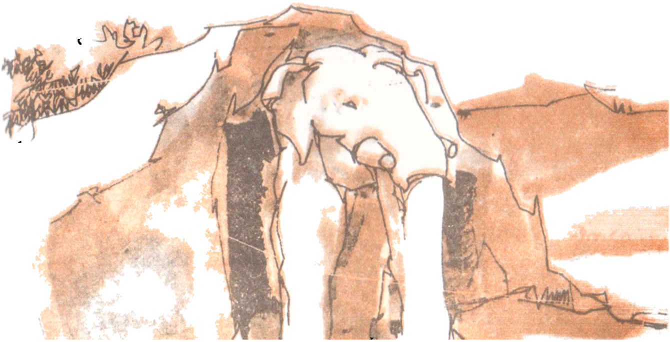
"विद्यार्थी वेद और दूसरे धार्मिक ग्रंथ कंठस्थ कर लेते हैं। लेकिन लिखने का ज्ञान उन लोगों के लिए जरूरी होता है जिन्हें रोजमर्रा का हिसाब-किताब रखना पड़ता है।"

"किस चीज़ से लिखते हैं? हम भी लिख पाते तो कितना अच्छा होता!" लड़की ने ज़ोर से कहा।

युवक विद्यार्थी ने मुस्कुराते हुए कपड़े का अपना बंडल खोला। भोजपत्र और खजूर के पत्तों की पट्टियाँ दिखायीं, फिर अपनी कलम और कूंची भी उसने लड़की को दिखायी जिनसे वह लिखता था।

"कल के लिए बहुत सारा काम पड़ा हुआ है," अभिलेखपाल ने कहा। "सम्राट ने हमारे सामने एक अच्छा आदर्श रखा है। हम लोगों को कठोर आदेश है कि प्रजा का सुख-दुख राजा तक फौरन पहुँचाया जाय, चाहे राजा खा रहे हों, सो रहे हों, महल के बगीचे में हों या कहीं भी हों।"

"देश का कल्याण करने में ही राजा को खुशी मिलती है," तपस्वी बोला। "जानवरों का युद्ध और शिकार राजा ने बंद कर दिया है। जानवर हो या आदमी, सम्राट बिना कारण खून नहीं बहाना चाहते, न किसी को तक़लीफ पहुंचाना चाहते हैं।"





"आह, जानवरों का युद्ध !" ईरानी चीख पड़ा। "अब देखने को शायद कभी न मिले। जब मैं बच्चा ही था तब तक्षशिला में देखा था। क्या लड़ाई थी—बैल से भिड़ा हुआ बैल, हाथी से भिड़ा हुआ हाथी, लेकिन सबसे ज्यादा मजा मुझे उन जानवरों की लड़ाई में आया जिनके लंबे-चौड़े माथे पर एक सींग होता है, सिर्फ एक सींग।"

"एक सींग का जानवर ?" लड़की ने आश्चर्य से पूछा। "मैंने कभी नहीं देखा। और अब, जब वह लड़ाई ही बंद कर दी गयी तो मैं कैसे देख पाऊंगी ?"

एक काला आदमी अभिलेखपाल के साथ था। अब तक चुप बैठा हुआ था। लड़की के इतना कहते ही बोल पड़ा, "मैंने गैंडे देखे हैं बेटी, उनके बारे में मैं तुम्हें बता सकता हूं। हाथियों की मांग ज्यादा है, सवारी के लिए भी और सेना के लिए भी। उत्तर के जंगलों में हाथी पकड़नेवालों का मैं मुखिया हूं। इन्हीं जंगलों में ये एक सींगवाले जंतु रहते हैं। इनका चमड़ा बड़ा सख्त



होता है, हाथी चीते की भी परवाह नहीं करता, लेकिन गैंडे से बच कर रहता है।"

"मैं गैंडा देखना चाहती हूँ। मैं उससे बिल्कुल नहीं डरूँगी," लड़की उत्साहित होकर बोल रही थी।

"यह है जंगल में रहनेवालों की बात," व्यापारी ने धीरे से बुदबुदा कर कहा।

चौकीदार और उसकी पत्नी ने व्यापारी की बात सुनली। उन्होंने अपनी बेटी की ओर देखा। व्यापारी की बात कहीं उसने तो नहीं सुन ली?

लेकिन लड़की अपने में मग्न कहती जा रही थी, "मुझे जंगल के जानवर अच्छे लगते हैं।" उसके चेहरे पर खुशी की मुस्कान थी।

"शिकार नहीं, युद्ध नहीं," बूढ़ा नौकर कोने में बैठा भुनभुनाया। "फिर हमारे राजा का सम्मान दूसरे राजे-महाराजे कैसे करेंगे? युद्ध और विजय राजा का काम है और शिकार उसका खेल है।"

"सम्राट ने विजय पायी है लेकिन दया के नियम का प्रचार करके," अभिलेखपाल ने घोषित किया। "दूर-दूर के बड़े-बड़े राजे-महाराजाओं से उनका संपर्क है, उनकी मैत्री है। पश्चिम के राजाओं और लंका के राजा से उन्होंने कहा है कि नियमों का पालन करने से जो

विजय मिलती है, वही सबसे बड़ी विजय है ।"

"पिछले साल सम्राट ने खुद अपने बेटे राजकुमार महेंद्र को सिंहल भेजा था । अपनी समस्त प्रजा के साथ लंका के राजा ने बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया है । धर्म के नियम की यह पहली विजय है ।"

जंगल की बेटी

यात्रियों की सभा भंग हुई । सब लोग अपने-अपने कमरों की ओर सोने चल पड़े । संगतराश अपने जानवरों को देखने गया कि वे आराम कर रहे हैं या नहीं ।

"अपने मेहमान को उसके घोड़े तक पहुँचा कर छोटे भाई के पास चली जाऊँ ?" बिबी ने माँ से पूछा ।

माँ ने मुस्कुराकर, सिर हिलाकर स्वीकृति देदी और बिबी संगतराश के साथ रफूचक्कर हो गयी ।

चौकीदार का परिवार अपने घर आ गया । बच्चे एक कोने में अपनी दादी के साथ सो रहे थे ।

"वह व्यापारी बिबी की ओर बेहद उत्सुकता से देख रहा था," चौकीदार की पत्नी ने कहा । "लगता है अब हमें उसके बारे में सब कुछ सच-सच उसे बता देना होगा । बहुत दुखी होगी वह ।"

"कभी न कभी तो उसे पता चलेगा ही—आज रात या साल भर बाद," चौकीदार की माँ कोने में पड़ी-पड़ी बोली । "परेशान मत हो बेटी, हमारे स्नेह के सहारे बिबी अपनी कहानी सुनकर भी बुरा नहीं मानेगी ।"

सास और बहू सोने की तैयारी कर ही रही थीं कि बिबी अंदर आयी, उसकी आँखों में आँसू भरे थे ।

"माँ," वह बोली, "घुड़साल के पीछे व्यापारी किसी से कह रहा था कि मैं तुम्हारी बेटी नहीं हूँ ।"

"यहाँ आकर मेरे पास बैठो, बेटी" । माँ ने पूछा, "और बताओ क्या हुआ ?"

बिबी माँ के पास बैठ गयी। माँ ने अपनी बाँह उसके गले में डालनी चाही तो वह खिसक गयी। फिर कहने लगी, "संगतराश, मैं और हाथी पकड़ने वाला, तीनों ईरानी घोड़ा देखने गये," उसकी आँखों में आँसू छलक आये। उसने उन्हें पोंछ लिया। "हम अस्तबल से बाहर आये तो व्यापारी राजा के अधिकारी से कह रहा था, 'यह लड़की उनकी बेटी हो नहीं सकती, कोई अनाथ, जंगली होगी। दयावश इन लोगों ने रख लिया होगा। लेकिन ताज्जुब है कि अपना नौकर या गुलाम न कह कर ये लोग उसे अपनी बेटी कहते हैं।'

"मैंने इस तरह की बात पहले कभी नहीं सोची। लेकिन शायद वह ठीक कहता है। मैं न तो तुम्हारी तरह लगती हूँ, न पिताजी की तरह, क्यों?" बिबी ने सीधा सवाल किया।

चौकीदार ने कमरे में प्रवेश करते समय यह बात सुन ली।

"हमें गुजरे हुए दिनों की कहानी बता देनी चाहिए कि हमारी बेटी हमारे पास कैसे आयी," उसने कहा। फिर बड़े शांत स्वर में बताने लगा, "कई साल पहले, इस कारवां सराय में आने से भी पहले, तुम्हारी माँ और मैं एक दूसरे को जानते भी नहीं थे। हमारे घर अलग थे। परिवार अलग थे। उनके बीच की दूरी सैकड़ों मील की थी।

"सम्राट जब उज्जैन के राज-प्रतिनिधि थे तो मेरे पिता जी उनकी नौकरी करते थे। मेरी माँ, यानी तुम्हारी दादी, जो वहाँ सो रही हैं, दीदी की सेविका



थीं। धनी व्यापारी की बेटी दीदी, जिससे राजकुमार प्रेम करते थे। लेकिन सम्राट बनकर पाटलिपुत्र आने के बाद उन्हें दीदी को छोड़ना पड़ा। मेरी शादी हो गयी थी। मेरा अपना घर था, अपना परिवार था।

"फिर मुझे राजा की सेना में भरती होकर युद्ध पर जाना पड़ा। युद्ध से मैं तो सकुशल लौट आया, लेकिन मेरी पत्नी और बच्चे प्लेग की महामारी में चल बसे थे। सिर्फ मेरी माँ बची थी जिसने उनके मरने की खबर मुझे दी।

"मैं उजड़ चुका था। दुबारा युद्ध में जाने के लिए सम्राट का बुलावा आया तो मैं बड़ा खुश हुआ। यह युद्ध बहुत दूर कलिंग देश के जंगली इलाकों में हुआ था।

"भयंकर लड़ाई लंबी खिंचती गयी। दोनों ओर के सिपाहियों ने खूब लूट-खसोट की। घर जला दिये गये। परिवारों को कत्ल कर दिया गया। किसानों और जंगलवासियों को सबसे ज्यादा नुकसान पहुँचा। इसी समय तुम्हारी माँ अपना घर-परिवार और तुम्हें सब कुछ खो बैठी। उस समय तुम्हारी उम्र मुश्किल से आठ महीने की रही होगी।"

चौकीदार चुप हो गया। आगे की कहानी उसकी पत्नी कहने लगी, "मेरा भी अपना एक घर-परिवार था। मेरे पति खेती करते थे। हमारे तीन बच्चे थे। सबसे छोटा बच्चा अभी हाल ही में पैदा हुआ था। हमारे खेत और झोपड़ियाँ जंगल के नज़दीक थे। हम शांतिपूर्वक रहते थे। तब एक दिन सिपाहियों का एक झुंड आया। उन्होंने मेरे पति और बच्चों की हत्या कर दी। मेरा घर जला



दिया । इससे पहले कि वे मुझे नुकसान पहुँचाते, उन्हें बुला लिया गया । मैं असहाय, डरी हुई पड़ी थी । तभी एक बच्ची करुण स्वर में रोती हुई, रेंगती-रेंगती मेरे पास आयी । मेरी गोद में पड़ कर वह सो गयी । मैंने उसे अपने से दूर खींच कर रखना चाहा, लेकिन वह मुझसे और चिपट गयी । लगा, मुझे छोड़ेगी नहीं ।

"समय गुज़रता गया । काले बालोंवाली नन्हीं बच्ची से मुझको प्यार होता गया । जंगली बेर, फल और जड़ें खा-खा कर हम अपना गुज़ारा करते रहे । एक दिन जब मैं खाने की तलाश में जंगल के दूसरे छोर पर गयी तो एक पत्थर से टकरा कर गिर पड़ी । मैं बेहोश हो गयी । जब मुझे होश आया, एक आदमी मुझ पर झुका हुआ था । उसकी आँखों के आँसू टप-टप मेरे चेहरे पर गिर रहे थे ।

"मैं उसे देखकर बुरी तरह डर गयी । 'डरो मत' उसने कहा । 'मैं किसी स्त्री या बच्चे को कभी नहीं सताऊंगा । बच्चे का रोना सुनकर मैं इधर आ गया ।' बच्ची इस समय किलकारियाँ लेकर हंस रही थी । उसकी ओर देखते हुए उसने पूछा, 'यह तुम्हारी बच्ची है ?'

"मैंने कहा, जब सिपाहियों ने मेरे अपने बच्चे मार दिये तो यह मेरे पास आ गयी । इसके पालन-पोषण का कोई ज़रिया मेरे पास नहीं है । आप इसे ले जाइए, इसका पालन-पोषण कर दीजिएगा ।"

पत्नी चुप हो गयी । अब चौकीदार ने बोलना शुरू किया ।

"मैं अकेले बच्ची की देखभाल नहीं कर सकता, मैंने कहा । अगर तुम भी मेरे साथ चलो तो मैं तुम दोनों की देखभाल कर लूंगा । जब तुम स्वस्थ हो जाओ, शरीर की ताकत वापस आ जाय, तो चली जाना ।

"इसी तरह हम साथ-साथ रहने लगे । जब लड़ाई ख़त्म हो गयी तो मैं तुम दोनों को लेकर अपने घर पहुँचा । घर पर मेरी माँ थी । तुम दोनों की दुखद कहानी जब उसने सुनी तो तुम्हें गले से लगा लिया, तुम्हारी माँ को अपनी बहू की तरह और तुम्हें अपनी पोती की तरह ।

"इसके कुछ ही दिन बाद सम्राट ने बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया । अपनी



विजय के लिए जितना रक्त-पात उन्होंने किया, मानव-मात्र को जितना नुकसान पहुँचा, उस पर उन्हें बड़ा दुख हुआ। उन्होंने युद्ध बंद कर दिया। अपने एक शिला-लेख पर उन्होंने लिखवाया है, 'युद्ध में जितने आदमी मारे गये या जितने कत्ल हुए उसके सौवें या हजारवें हिस्से को भी वैसा दुख पहुँचा तो राजा को बहुत क्लेश होगा।' उन्होंने धर्म के सहारे शासन करने का फैसला किया। उनके सारे साम्राज्य में एक नया जीवन आरंभ हो गया। जब मैंने सुना कि राजा के अधिकारी किसी ऐसे आदमी की तलाश में हैं जो परिवार के साथ आकर यहाँ रहे और इस विश्राम-घर की देखरेख करे तो मैंने इस नौकरी के लिए प्रार्थना-पत्र दे दिया। मुझे नौकरी मिल गयी। हमारी नयी जिंदगी शुरू हुई। तुम्हारी दादी, तुम्हारी माँ और मैं, तुम्हें लेकर यहाँ रहने लगे। थोड़े ही दिन बाद तुम्हारे एक भाई हुआ। कुछ दिन बाद एक और बच्चा परिवार में आया।"

बिंबी खामोशी से सारी कहानी सुनती रही। जब कहानी ख़त्म हो गयी तो दुखी होकर बोली, "फिर तो वह आदमी ठीक ही कह रहा था। मैं आपकी बेटी नहीं हूँ और मेरे माता-पिता कौन हैं, कोई नहीं जानता। ठीक है न?"

"सचमुच!" दादी माँ बोल पड़ी, "माता-पिता बच्चे की देखभाल करते

हैं। अगर तुम्हारी नयी माँ ने तुम्हें उठा कर कलेजे से न लगाया होता तो जंगल में तुम मर गयी होतीं। मेरे बेटे ने तुम लोगों की देखभाल न की होती तो तुम दोनों कुछ ही दिनों बाद मर चुकी होतीं। नन्हा अनिकेत जब जागता है तो तुम्हें ही पुकारता है। वह तुम्हारा भाई नहीं है? ये तुम्हारे माता-पिता नहीं हैं? बोलो।"

"हैं," बिबी मुस्कुरायी और दादी माँ से लिपट गयी। फिर उठी, जँभाइयाँ लेते हुए बोली, "दादी माँ, मुझे सुबह जल्दी उठा दीजिएगा। इतने सारे मेहमान हैं। पिताजी की, माँ की मदद करनी होगी और फिर हाथी पकड़नेवाले ने गैंडे के बारे में बताने का वायदा किया है।"

एक जहाज बंदरगाह पर

चोला राजाओं की राजधानी कावेरीपट्टनम् में बेहद चहल-पहल थी। एक बड़ा-सा जहाज तरह-तरह की चीज़ें लेकर अभी-अभी पहुंचा था। उसमें से सामान उतारा जा चुका था। दूसरी चीजें, जो वहाँ पैदा होती थीं या बनायी जाती थीं, भर कर जहाज वापस जाने वाला था। पुहार क्षेत्र से—जहाँ राजा का महल था, जहाँ अमीर लोग रहते थे—लोग फटे पड़ रहे थे। बीच में मुख्य बाज़ार पड़ता था। तट से थोड़ा हटकर गोदाम बने हुए थे। वहीं जहाज-घाट था, चुंगीघर था, विदेशी छावनी थी, जहाँ दूसरे देशों के व्यापारी और नाविक भरे हुए थे। नदी के मुहानेवाला बंदरगाह जहाज़ों, नावों और माल लादनेवाले पोतों से भरा हुआ था। इससे थोड़ा हटकर एक मीनार थी जिस पर प्रकाश-गृह बना हुआ था।

दोपहर के समय सात युवा दोस्त मिले। वे ईंटों से बने एक चबूतरे पर बैठे नीचे समुद्र के किनारे का नज़ारा देख रहे थे। उनमें सत्यन्, परनार और सादुवान धनिक व्यापारियों के बेटे थे। पेकन, चुंगी अधिकारी का बेटा था। अप्पार के पिता विद्वान आदमी थे। राहुल, जहाज के एक कप्तान का बेटा था और वेल्लुवर के माता-पिता कवि थे।

इसी समय कुम्हार का बेटा ईलाम दिखायी पड़ा। लदी हुई टोकरियों



के बोझ से उसके कंधे झुके हुए थे ।

"ईलाम, ईलाम, टोकरियाँ नीचे रख दो । थोड़ी-सी मिठाई तुम भी खाते जाओ," वेल्लुवर ने चिल्लाकर कहा ।

ईलाम ने राहत की साँस ली । कंधों का बोझ नीचे रख दिया और बैठ गया ।

"आज सुबह मैंने दस बर्तन बेचे," उसने गर्व से कहा । "उसके बाद बाज़ार गया, माँ के लिए चावल, नमक, सूखी हुई मछली और शहद खरीदा । कौड़ियाँ फिर भी कुछ बच गयीं ।"

"बर्तन, बर्तन!" वेल्लुवर गीत की तरह गुनगुनाने लगा । "चमकीले काले और लाल ! धुंधले काले और स्लेटी ! नक्काशीदार ढक्कनवाले, चौड़े मुंह के या सुराहीदार बर्तन ! खाना पकाने के बर्तन ! जीवितों के काम आनेवाले बर्तन ! मृतकों की भस्म रखनेवाले बर्तन !"

"चुप भी रहोगे ?" सादुवान ने कहा और एक पत्ते पर थोड़ी-सी मिठाई रख कर ईलाम की ओर बढ़ा दिया । "आज इस पर्व के दिन भी अस्थि-कलश के गीत गाना तुम्हारे लिए ज़रूरी है ? ईलाम के पिता उस तरह के बर्तन नहीं बनाते ।"

"अस्थि-कलश बनानेवाले कुम्हार दूसरे होते हैं," ईलाम बोला । "कितनी स्वादिष्ट मिठाई है, बाज़ार की दूकान से खरीदी ?" उसने पूछा ।

"नहीं," सादुवान ने जवाब दिया । "माँ ने खास तौर पर पिताजी के लिए



बनायी थी। पिताजी एक लंबी यात्रा से कल ही लौटे हैं। वह उत्तर की ओर गये थे। वहाँ का सामान वे यवन (यूनानी और रोमन) जहाज़ों को बेच देंगे।"

"तुम्हारे पिता समुद्र के रास्ते गये थे या ज़मीन के?" राहुल ने पूछा।

"इस बार वे तटीय (किनारे-किनारे चलनेवाले) जहाज़ से गये थे," सादुवान ने जवाब दिया।

"सचमुच आदमी क्या उन जंगल से भरी हुई काली पहाड़ियों के पार भी चले जाते हैं?" ईलाम ने पूछा।

"दक्षिण पथ और उत्तर पथ में हमेशा से सम्पर्क रहा है," अप्पार ने जवाब दिया। फिर सादुवान की ओर मुड़ते हुए उसने पूछा, "तुम्हारे पिता जी पहले कभी ज़मीन के रास्ते भी गये हैं न?"

"हाँ, जब उन्हें घोड़े वापस लाने थे," सादुवान बोला। "अपने यहाँ से वह सूती कपड़े, मोती, शंख और कौड़ी, मोतीवाली सीपियाँ ले जाते हैं, और घोड़े, रत्न, दवाइयाँ, तरह-तरह की सुगंधि, उत्तर के विभिन्न क्षेत्रों से लेकर लौटते हैं। राजा और सेना के लिए घोड़ों की ज़रूरत हमेशा रहती है। रत्न, सुगंधि और दवाइयाँ अमीर लोग ले लेते हैं, इनकी ज़रूरत यवन व्यापारियों को भी रहती है।"

"सामान और विचारों का आदान-प्रदान शताब्दियों से चला आ रहा है," अप्पार बोला। "मगध के मौर्य दक्षिण में होनेवाले मोतियों के बारे में जानते थे। मौर्यवंशीय सम्राट अशोक ने हमारे यहाँ और लंका में भी कई शिक्षक भेजे जो धर्म की शिक्षा के साथ-साथ जड़ी-बूटियों के बारे में भी बताते थे। ऐसी जड़ी-बूटियाँ जो आदमी और जानवर दोनों के लिए उपयोगी थीं।"

अचानक वेल्लुवर ने समुद्र के किनारे खड़े एक लंबे लड़के की ओर इशारा किया, "कारी, बहेलिये का बेटा। इसके पिता तोता पकड़कर बेचते हैं। न जाने क्यों बड़ा उदास लग रहा है। मैं अभी उसे बुलाकर लाता हूँ," उसने कहा। "सादुवान, मेरे हिस्से की मिठाई उसे दे देना।"

कारी काला, लंबा और दुबला था। उसके शरीर पर कपड़े नाम मात्र को थे। आम तौर पर उसके चेहरे पर एक ताज़ी मुस्कान, और कंधे पर फुदकता



हुआ एक हरा तोता होता । दूसरे तोते बेंत के पिंजड़ों में बंद होते जिन्हें वह बाज़ार में बेचने जाया करता था ।

वेल्लुवर को अपनी ओर आते देख वह दूसरी ओर मुड़ गया । वेल्लुवर ने उसका हाथ पकड़ लिया और अपनी ओर खींचने लगा । चलते-चलते वह बड़े उत्साह से बातें करता जा रहा था । वेल्लुवर कारी के साथ दोस्तों के पास आ गया । कारी खामोश रहा । वेल्लुवर कारी को साथ लेकर बैठ गया । उसने बातचीत का विषय बड़ी होशियारी से बदल दिया ।

"पेकन," उसने कहा, "तुम्हारे पिता राजा के चुंगी के दफ्तर में क्या करते हैं ? हम लोगों को सामानों के बारे में बताओ ।"

"किनारेवाले शहर की चौड़ी सड़कों पर, व्यापारियों के गोदामों के बाहर सामान पड़े रहते हैं । वहाँ उनका वज़न किया जाता है, फिर उन पर राजा की मुहर लगती है । भयंकर, पूंछ उठाये शेरवाली मुहर । जहाजों पर लदने से पहले उन सामानों पर चुंगी वसूली जाती है," पेकन ने समझाया । "जो सामान जहाज़ों से उतरता है उन्हें भी वज़न करके देखा जाता है । उन पर मुहर लगती है, तब जाकर व्यापारी उन पर अपना कब्ज़ा कर सकते हैं ।"

"मेरी समझ में नहीं आता, सादुवान के पिता जैसे धनिक व्यापारी कारवाँ या जहाज़ में सामान लेकर यवनों के यहाँ क्यों जाते हैं जब कि यवन



सामान लेने खुद आते हैं," कुम्हार का बेटा बोला ।

"बात सही है," सादुवान ने कहा । "पिताजी गंगा और इरावती की खाड़ियों को पार करके पूर्वी द्वीप समूह तक गये हैं । अपनी जरूरत की चीज़ों के अलावा कुछ ऐसी चीज़ें भी वहाँ से लाते हैं जो यवनों को बेची जा सकें । यवन काली मिर्च, मोती आदि बहुत पसंद करते हैं ।"

"और तोते ।" वेल्लुवर ने इस अंदाज़ में कहा जिससे कारी कुछ बोले, लेकिन कारी भुन्ना कर रह गया ।

"हाँ, तोते, मोर, बंदर, बारीक मलमल, हाथी दांत, हरे रंग के कीमती पत्थर, अमीर यवन अपनी मुद्रा और नक्काशी के लिए इन्हें खरीद लेते हैं । इनके बदले ज्यादातर वे सोना देते हैं ।"

"वे बेचने के लिए चीजें भी अपने साथ लाते हैं," पेकन बोला। "अंगूर की शराब से भरी हुई दो हत्थोंवाली सुराहियाँ, वर्तन, शीशे के सामान, लोहे की मशालें।"

"लाते हैं," सादुवान ने पेकन की बात मान ली। "लेकिन हमें उनकी चीज़ों की जितनी जरूरत है उससे कहीं ज्यादा उन्हें हमारी चीजों की है। इसलिए हमारे व्यापारी दूर-दूर तक जाते हैं। अपने लिए, अपने शहर के लिए, अपने राजा के लिए धन कमा कर लाते हैं। वहाँ के देसी व्यापारियों से वे काली मिर्च खरीद कर लाते हैं। पूर्वी देशों से उन्हें मसाला मिलता है। चीते और तेंदुए की खाल, कवच (जिरहबख्तर) के लिए हमारी सेना को भी चाहिए और यवनों के हाथ यह बेचा भी जाता है। हमारे व्यापारियों को भेड़ या बकरी के रोयेंवाले मुलायम चमड़े और हाथी दाँत शिकारियों से मिल जाते हैं। कछुए की पीठ हमारे अपने समुद्री किनारों पर मिलती है और पूर्वी द्वीप समूह में भी।"

अब सत्यन् ने बात उठा ली। "लगता है यवनों के लिए हमारी चीजें कभी पूरी नहीं पड़ेंगी। हमारे बढ़िया सूती कपड़ों की उन्हें हमेशा जरूरत रहेगी। दाम अच्छा देते हैं। उनके दिये हुए सोने से हमारा खजाना भरता है और चावल, मछली, तिल का तेल, केले और कंटकिफल (कटहल के समान एक फल जो पूर्वी द्वीप समूह में पाया जाता है) नाविकों, गाँव और शहरवासियों सबके लिए जरूरी है।"

ईलाम उत्सुक होकर बोल पड़ा, "जब सारा नाविक ही लेलेंगे तो चावल और मछली हम गरीबों को कहाँ से मिलेगी?"

कारी की भौहों पर बल पड़े। उसने स्वीकृति में सिर हिलाया।

"चिंता की बात नहीं," पेकन बोला। "किसी के लिए कोई कमी नहीं। कावेरी के मैदानों में जितना धान होता है उतना और कहीं नहीं होता। और हमारे समुद्री किनारों में मछलियाँ भरी पड़ी हैं।"

यवन व्यापारी और तोता

अचानक कारी फूट पड़ा, "ये यवन अपने देश में क्यों नहीं रहते?"

"क्या बात है ? तुम्हारे तोते की बात है ? क्या हुआ ? बताओ," अप्पार ने नम्रता से पूछा ।

कारी के लड़खड़ाते हुए शब्द बाहर आये, "तुम्हारा यवन दोस्त मेरा तोता मुझसे ले गया ।"

लड़कों ने एक दूसरे की ओर देखा ।

"कौन यवन ?" ईलाम ने आश्चर्य से पूछा । "क्या तुमसे छीन ले गया ?"

कारी की आँखें गुस्से से जलने लगीं । "लालच में आकर मेरे बाप ने मेरा प्यारा तोता बेच दिया," उसका गला भर आया ।

"सारी बात बताओ, शुरू से," अप्पार ने दृढ़ता से पूछा ।

आखिर कारी के बोल फूटे, "कल मेरी खुशी का आखिरी दिन था । पिताजी शेर के शिकार से वापस लौटे थे । उनके सकुशल लौटने की खुशी में माँ ने कौवों को दाना चुगाया । इस मौसम में तोते पैदा होते हैं । मेरे पास आठ तोते बड़ी अच्छी नस्ल के थे । मैं उन्हें शहर में बेचने जा रहा था । उस शाम, नमक का व्यापारी हमारे गाँव में रुका था । पहाड़ी गाँवों में नमक और सूखी हुई मछलियाँ बेच कर वह लौट रहा था । उसका बोझ काफी कम हो गया था । शहद के छत्ते, कंटकिफल, मुलहठी और कड़वा कद्दू वह जंगली लोगों से लेकर आया था । उसने मेरे पिताजी को बताया कि एक यवन-जहाज बंदरगाह पर पहुँच रहा है । तुमने वह महान नगर देखा नहीं है । चीते की खालें लेकर मेरे साथ चलो । व्यापारियों के आने का इंतजार मत करो' उसने कहा । और हम चल पड़े ।" इतना कहते-कहते कारी रुक गया । ज़रा देर बाद उसने फिर कहना शुरू किया, "जब हम शहर पहुँचे तो चुंगी-घर में जाकर शेर की खालों को बेचने की व्यवस्था की । जहाज़ घाट पर नाविक थे, यवन भी और दूसरे भी । माँ के बनाये हुए बेंत के पिंजड़ों में बंद तोते वे खरीदना चाहते थे । फिर एक यवन सौदागर आगे आया, उसने एक मोटी बंडी पहन रखी थी । उसकी कमर पर एक कपड़ा बँधा हुआ था । देखने में वह अमीर लगता था ... ।"

कारी फिर चुप हो गया । परानर ने नम्रता से कहा, "यवन ढेर सारे कपड़े पहनते हैं । उनका देश ठंडा है शायद इसीलिए । जो भी हो, हमें तो फायदा



ही है । उनके हाथ हम ज्यादा से ज्यादा कपड़े बेच सकते हैं ।''

कारी कड़वे घूंट की तरह परानर की बात पी गया । फिर बोला, ''मेरा तोता मेरे कंधे पर बैठा हुआ सब को राम-राम कर रहा था । अचानक यह अभागा यवन पास आया । बोला, 'मैं यह तोता खरीदूंगा ।'

'' 'यह बेचने के लिए नहीं है । इसके पास पिंजड़ा नहीं है ।' मेरे पिताजी बोले । 'कोई फर्क नहीं पड़ता,' उसने कहा, 'किसी भी पिंजड़े में डाल दो । मैं इसी को खरीदूंगा । मेरे देश में एक लड़का बीमार है । मैं उसके लिए इसे खरीदना चाहता हूं ।'

''नहीं, नहीं'' मैं चिल्लाया, और अपने मोती को अपने कंधे पर सम्भालता हुआ भागा ।

''तब उस अभागे ने चांदी का एक सिक्का निकाला, जैसे मैंने कभी चांदी का सिक्का देखा ही न हो । मेरे पिता लालच में आ गये । एक तोते को पिंजड़े से निकाल दिया । झपट कर मेरे मोती को उस खाली पिंजड़े में बंद कर दिया । सौदागर पिंजड़ा लेकर चलता बना । मैं चिल्लाता हुआ उसके पीछे दौड़ने लगा ।

लेकिन मेरे पिता ने मुझे रोक लिया। वह मेरे लिए मिठाई खरीदने जा रहे थे लेकिन मैं इधर भाग आया। तब से मैं किनारे पर ऊपर-नीचे भटक रहा हूँ। अपने प्यारे तोते की तमाम बातें मुझे याद आ रही हैं।"

"यवन उसे अच्छी तरह रखेगा," पेकन की आवाज़ नरम थी। "मैंने चाँदी के तार से बने हुए पिंजड़े देखे हैं जिन पर हाथी-दाँत और कछुवे की खाल जड़ी होती है। हमारे शिल्पी इस तरह के पिंजड़े बनाकर यवनों के हाथ बेच देते हैं। अपने पालतू जानवर और पक्षी वे लोग इसी में रखते हैं।"

"मेरे मोती को चाँदी का पिंजड़ा नहीं चाहिए, वह मेरे कंधों पर फुदकना चाहता है," कारी बोला।

"यह हुआ कब?" सत्यन् ने पूछा।

"सुबह, तड़के ही। अगर नमक के सौदागर की गाड़ी न आयी होती तो हमारी मुलाकात यवन से न हुई होती। और मेरे पिता भूखे हाथी की तरह उस सिक्के पर टूट न पड़े होते जिसे वह खा भी नहीं सकते।"

"तुमने सुबह से कुछ खाया है?" वेल्लुवर ने प्यार से पूछा।

"मेरा दम घुट रहा है। खाने की बात भी इस हालत में कौन सोच सकता है?





तुम्हारा क्या ख्याल है? मेरा मोती क्या खा रहा है?"

"नाविकों के पास तोतों को खिलाने के लिए बीज और दाने हमेशा होते हैं," सादुवान ने नम्रता से कहा। "तुम्हारा मोती अच्छा खाना खा रहा होगा, थोड़ी सी मिठाई लेलो, कारी।"

"धन्यवाद, सादुवान। मेरे गले के नीचे नहीं उतरेगी। अब मैं नीचे किनारे पर जाऊंगा। वहां से दूर-दूर तक समुद्र को देखता रहूँगा, जिस पर से होकर मेरा मोती जायेगा। मैं सोच भी नहीं सकता कि सुबह जब उठूंगा तो मेरा अभिवादन करने के लिए मेरा मोती नहीं होगा। हो सकता है किसी समुद्री को मेरे जैसे किसी लड़के की ज़रूरत हो जो उसके जहाज़ पर काम कर सके। मैं उसके साथ चला जाऊंगा। जंगल के पेड़ों पर चढ़ने के बजाय मैं जहाज़ के मस्तूल पर चढ़ूंगा। पिताजी अपना तोता पकड़ते रहें।"

"मैं तुम्हें अकेले नहीं जाने दूंगा। मैं तुम्हें रोक लूँगा," वेल्लुवर ने प्यार से कहा।

परानर समुद्री कप्तान के बेटे राहुल की ओर मुड़ा और बोला, "ये विदेशी पश्चिम से तमिल देश में क्यों आते हैं?"

समुद्री मार्ग और वाणिज्य-व्यापार

"तीन राज्यों से यवनों के व्यापारिक संबंध हैं," राहुल ने कहना शुरू किया। "मुझीरिस और चेप्ता बंदरगाह उनके रास्ते में पड़ते हैं। यवन वहाँ

हमारे यहां कपास होता है। कपास, जिसे यवन 'ऊन का पेड़' कहते हैं, उनके यहां नहीं होता। लेकिन व्यापार में इतना फायदा होता है कि चोला देश की पैदावार के अलावा हमारे व्यापारी पूर्वी द्वीप समूहों से काली मिर्च, मसाले, कछुए की खाल, और उत्तर से हीरे-जवाहरात और हाथी-दांत मंगा कर यवनों के हाथ बेच देते हैं।"

"कावेरीपट्टनम् में अनेक यवन और दूसरे विदेशी हैं," पेकन बोला। "लेकिन फिर भी हमारे पिताजी कहते हैं कि इनके व्यापारिक संबंध उत्तर में पोनपत्तन से हैं। वहां यवनों के घर हैं, जहाज-घाट और समुद्री किनारों पर मैदान हैं। साल में इनके जहाज कई बार आते है, क्योंकि पोनपत्तन का बंदरगाह शांत रहता है।"

"क्या ये यवन काली मिर्च उसी तरह खाते हैं जैसे हम लोग चावल खाते हैं?" अचानक कारी व्यंग से पूछ बैठा।

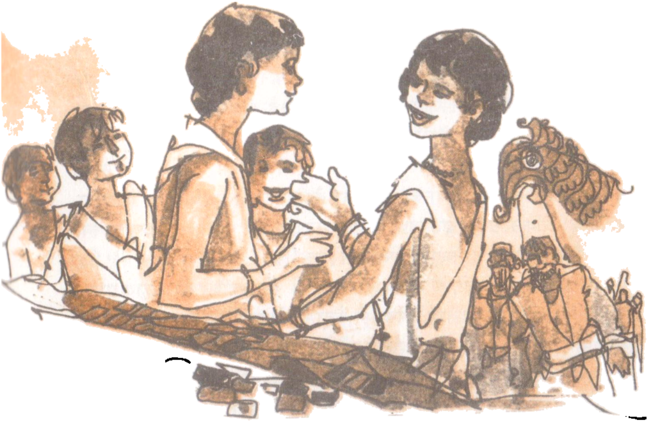
"उनका खाना बेहद फीका और स्वादहीन होता होगा। वरना काली मिर्च की उन्हें इतनी ज्यादा जरूरत क्यों पड़ती?" परानर ने कहा।

"गरीब आदमी चावल के मांड में जरा-सी काली मिर्च डाल दे तो स्वाद आ जाता है," ईलाम उत्सुक होकर बोला। "अगर ये विदेशी सब कुछ ले जायेंगे तो हमारे लिए क्या बचेगा?"

"सबके लिए काफी है," सत्यन् ने कहा। "तमिल देश में काली मिर्च की लताएँ भरी पड़ी हैं। यवन सफेद रंग की काली मिर्च ले जाते हैं। हमारे यहां इसका इस्तेमाल कम ही होता है।"
काली मिर्च के लिए जाते हैं। उनके जहाज आधे से ज्यादा काली मिर्च से भरे होते हैं। फिर रत्नों की रानी मोती है। मोतियों के व्यापार के लिए कोरकाई मशहूर है। ये लोग वहां जाते हैं। पांड्या राज्य में सीपियां होती हैं।"

अब सादुवान ने कहना शुरू किया,

"तमिल देश के उत्पादनों के लिए यवन लालायित रहते हैं। चोला का किनारा पूर्व और पश्चिमी देशों के बीच में पड़ता है। यहां से चीजें लेने में उन्हें सुविधा होती है। निर्यात के लिए हमारी बारीक मलमल मशहूर है, क्योंकि



"क्या ये यवन अपने लिए खुद कुछ नहीं करते?" कारो ने भर्त्सना के स्वर में कहा।

"यवन चतुर शिल्पी हैं," पेकन बोला, "राजा के शहर के लिए इन्होंने चिरागदान वनाये हैं। पुहार के शाही बगीचे का कक्ष यवन वढ़ईयों ने दूसरे लोगों के साथ मिलकर सजाया है।"

"वे जहाज़ भी अच्छा वनाते हैं। पूडूके के लिए उनका वनाया हुआ जहाज़ों का दस्ता समुद्र पर तैरता हुआ देखा जा सकता है," राहुल ने आगे जोड़ा।

"हमारे जहाज़ कितने वड़े होते हैं और उनमें कितने आदमी जा सकते है?" परानर ने पूछा।

"वड़े-वड़े जहाज लंबी यात्राओं के लिए वनायं जाते हैं, कुल दो सौ या उसमें भी ज्यादा संख्या जानेवालों की होती हैं जिनमें नाविक, व्यापारी, यात्री सभी होते है," राहुल बोला। "इनके अलावा पाँच सौ गाड़ियों के वज़न का सामान भरा जाता है। कभी-कभी लकड़ियों का अंबार इनमें ढोया जाता है।

पीने का पानी, खाने का सामान अलग मे। किनारे-किनारे चलनेवाले जहाज बीच समुद्र में चलनेवाले जहाज़ों से हल्के होते हैं। बड़े-बड़े जहाज़ों में एक सिरे से दूसरे सिरे तक कोठरियाँ होती हैं। जहाज का अगला हिस्सा हाथी या भैंस के सिर, या तोते और मोरनी के सिर जैसा होता है। भारी मस्तूल बड़ी-बड़ी पालों के साथ हवा को पकड़ कर तैरने लगते हैं। आँधी से इन्हें खतरा रहता है, लेकिन सबसे खतरनाक स्थिति वह होती है जब हवा बिल्कुल रुक जाती है और पानी पर जहाज स्थिर हो जाता है।"

"राजा के नाविकों के अधिकारी खतरे में पड़े जहाज़ों की सहायता का बड़ा अच्छा इंतज़ाम रखते हैं," पेकन ने कहा। "लेकिन जिस जहाज़ का मस्तूल और पाल तूफान में खत्म हो चुका हो उसके लिए कुछ भी नहीं किया जा सकता। फिर भी समुद्र पर यात्राएँ होती हैं। हमारे चोला के जहाज़ों के साथ अरब और यवन के जहाज़ी अपनी यात्राएँ सुरक्षित ढंग से पूरी कर लेते हैं।"

"ये नाविक एक समुद्र को पार करके दूसरे समुद्र में कैसे पहुँच जाते हैं?" सत्यन् ने पूछा।

"समुद्र के ऊपर से जो हवाएं चलती हैं उनका अपना रहस्य है," राहुल बोला। "नाविकों को किसी हद तक इन रहस्यों का पता होता है। मौसमी हवाएँ होती हैं, जो एक खास मौसम में एक खास दिशा से चलती हैं। दूसरे मौसम में इनकी स्थिति बदल जाती है। समुद्र पार करते समय नाविक इन



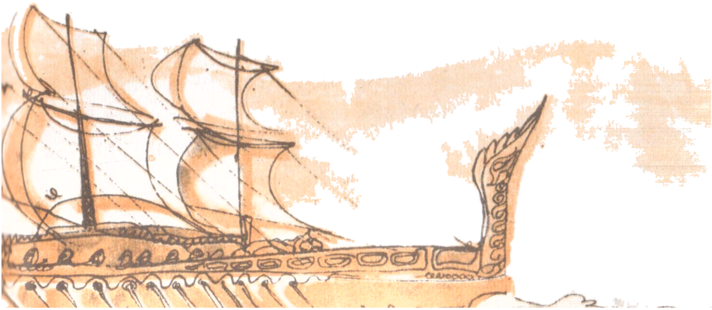
हवाओं का ध्यान रखकर चलते हैं।"

"सादुवान के पिता जिन तकलीफों और खतरों से गुज़रकर अपनी यात्रा समाप्त करते हैं, सोच-सोच कर मैं काँप उठता हूँ," शहर का रहनेवाला ईलाम फूट पड़ा।

"खतरे हर जगह हैं," सादुवान ने कहा। "उन गाँववालों के बारे में तो सोचो जो अपने जानवरों की रक्षा करने के लिए चीते और तेंदुओं से लड़ते रहते हैं। कभी-कभी उन्हें अपनी जान भी गँवानी पड़ती है। हर गाँव में एक वेरंक्कल (एक नियत स्थान) बना हुआ है जहाँ स्त्रियाँ अपने घरवालों के सकुशल लौट आने की प्रार्थना करती हैं, पूजा चढ़ाती हैं। सारे दिन और हर दिन गोताखोर की जान खतरे में होती है जो मोती की तलाश में गोता लगाता रहता है। कारी के पिता कुछ कम खतरों से गुज़रते हैं जब वह हाथियों और चीतों का शिकार करने जाते हैं? कारी खुद जानता है कि किसी भी समय पेड़ के खोखले से किसी तोते के बजाय एक नाग फन फैलाकर निकल सकता है।" उसने कारी की ओर देखा, लेकिन कारी उदास और खामोश रहा।

"शहर उन्नति करता है। राजा के खज़ाने में सोना भरता जाता है," सत्यन ने कहा। दूसरे समर्थन में सिर हिलाते रहे।

कारी की कठोर आवाज़ सुनकर सब सहम गये, "राजा सोने का क्या करते हैं? इससे हमें क्या फायदा होता है?" उसने पूछा।



सारे लड़के एक साथ बोल उठे, "राजा का पहला कर्त्तव्य है अपने राज्य की रक्षा करना। दूसरे राजाओं के हमलों से वह अपने राज्य को बचाता है। जानवरों को उठा ले जानेवाले चीतों और तेंदुओं से, और दूसरी पहाड़ी जातियों से वह नगर की रक्षा करता है। इसके लिए एक मजबूत सेना जरूरी है।"

"राजा कला का पुजारी है। नर्तक, गायक, कवि उसकी ओर इस तरह खिंचे चले आते हैं जैसे फलों से लदे हुए पेड़ों की ओर तोते।"

"बगीचों के विश्राम-गृहों में, धर्मशालाओं में राजा साधु-संतों और विद्वानों को आश्रय देता है।"

"फिर दूसरे उत्सव भी हैं, कुश्ती, मुक्केबाजी—आम लोगों के मनोरंजन के साधन।"

"किसानों, गड़रियों और शिकारियों के लिए?" कारी ने रूखेपन से पूछा।

"एक अच्छा राजा किसान को कभी नहीं भूलता," सत्यन् बोला, "तालाबों के बनवाने और उन्हें सुरक्षित रखने की वह पूरी व्यवस्था करता है। जंगलों को काट-काट कर खेती के लिए जमीन का प्रबंध करता है, खेती के लिए दूसरी चीजें भी इकट्ठी करता है।"

भीड़ छँट गयी। वेल्लुवर खड़ा हो गया। उसनी अपनी बाँह में कारी को घेर लिया। "कारी और मैं घर जा रहे हैं, माँ के पास," उसने कहा। फिर कारी को जैसे मनाने लगा, "माँ चाहती हैं कि चल कर तुम वह झाड़ी देख लो जो हमने लगायी है। और उस चिड़िया के बारे में भी उन्हें बताओ जो आकर उस पर बैठती है।"

समुद्री कस्बे से राजा के नगर की ओर कारी खिचता चला गया। वे बाजार से गुजरते हुए उस ओर पहुँचे जिधर मकान बने हुए थे। बगीचे के विश्राम-गृह के पास ही वेल्लुवर के माता-पिता का एक छोटा-सा मकान था। लकड़ी के बने हुए घर की जालीदार खिड़कियों के सूराख ऐसे लग रहे थे जैसे हिरन की आँखें। लकड़ी के दरवाजे पर बारीक खुदाई की हुई थी। वेल्लुवर ने कारी से रुककर इधर-उधर देखने को कहा और खुद अंदर चला गया।

वेल्लुवर की माँ को जल्दी ही स्थिति समझ में आ गयी। वह बाहर आयी और कारी को छाती से लगाने के लिए अपनी बाँह फैला दी। लेकिन कारी बोला, "मुझे हाथ-मुंह धो लेने दीजिए।" माँ मुस्कुरायी और वेल्लुवर कारी को लेकर मकान के पिछवाड़े पहुँचा। वहाँ मिट्टी का एक बहुत बड़ा घड़ा रखा था। काले और लाल रंगों से रंगे हुए घड़े में पानी था। कारी ने पानी से धूल और पसीना धो डाला। उसके दिल में एक कसक उठी।

वेल्लुवर की माँ दोनों लड़कों के साथ सामने के बगीचे में आ गयी। दोनों को चौकियों पर बिठा दिया। चौकियों के पाये कछुए की पीठ और सीपियों के सहारे टिके हुए थे। उन पर सजावट भी की गयी थी। मक्खन और दूध से भरे हुए दो बड़े प्याले वहाँ पहले से ही रखे हुए थे। कारी बड़ी कृतज्ञता से दूध पी गया और पास ही रखे हुए पक्के केले खाने लगा।

खा-पीकर दोनों ने फिर से हाथ-मुंह धोया। दोनों चौखट पर बैठ गये। वेल्लुवर की माँ ने अपनी बाहों में कारी को ले लिया। "तुम्हें दुखी नहीं होना चाहिए, कारी," उसने कहा। "यवन व्यापारी तोते को बड़े प्यार से रखता है, उन्हें अच्छी तरह खिलाता-पिलाता है। एक यवन व्यापारी ने मुझे भारत से लाये हुए तोते के बारे में लिखी कविताएँ सुनायी थीं।"

"वह अपने लिए एक दर्जन अच्छे तोते खरीद सकता था, उसने मेरा



तोता क्या खरीदा ?" कारी बोला ।

"तुमने अपने तोते को प्यारी-प्यारी बातें करना सिखाया था। उसने सोचा होगा, उस तोते से उसका बीमार बच्चा खुश रहेगा," माँ ने समझाया ।

"जब मेरा तोता मेरी भाषा बोलेगा तो उस यवन बच्चे की समझ में क्या खाक आयेगा ?" कारी ने आपत्ति की ।

"एक तोता जब आदमी की एक भाषा सीख लेता है तो दूसरी भाषा सीखने में उसको ज्यादा वक्त नहीं लगता", माँ ने उत्तर दिया ।

"ठीक है। मेरा मोती उस लड़के की भाषा बोले । लड़का खुश हो, मैं खुश नहीं हो सकता," कारी ने मुंह फुला कर कहा ।

"बेटा, यह न भूलो कि वह बच्चा बीमार है, बिस्तर से उठ नहीं सकता । तुम्हारी तरह न तो जंगल में घूम-फिर सकता है, न पेड़ों पर चढ़ सकता है, न चिड़ियों को ही देख सकता है," माँ ने प्यार से कहा ।

कारी सोचने लगा, फिर भावुक हो गया । बोला, "मेरे पिता ने उसे चांदी के एक सिक्के के लिए बेच दिया । चांदी का सिक्का क्या खाया जा सकता है ?"

"पिता पर नाराज मत हो", माँ ने समझाया। "मेरे पास बैठो, मैं तुम्हें एक गीत सुनाऊंगी, तुम्हारा गुस्सा शांत हो जायेगा । तब तक वेल्लुवर मेरा एक काम करके आता है ।"

"वेल्लुवर की माँ ने बेटे को कारी के पिता की तलाश में भेजा । वेल्लुवर को याद था उसने कारी के पिता को समुद्र के किनारे कहीं देखा है । दुखी, उदास, कारी की तरह भटकते हुए ।

वेल्लुवर की माँ अपनी वीणा उठा लायी । तारों से हल्की झनकार निकली । वह एक तोते का गीत गाने लगी । कारी का गुस्सा गायब होने लगा । न चाहते हुए भी उसे मुस्कुराना पड़ा ।

उधर नीचे, समुद्र के किनारे, एक काला, तगड़ा आदमी बेचैनी से इधर-उधर घूम रहा था । तभी इरुक्कु की माला पहने एक लड़के ने उसकी बाँह पकड़ ली । "आप कारी को ढूंढ़ रहे हैं ?" वेल्लुवर ने पूछा । "वह मेरे घर पर है । मेरी माँ उसे गाना सुना रही है ताकि वह अपने तोते का दुख भूल जाये ।"



"मैं क्या करूँ, मेरी कोई गलती नहीं थी," कारी का पिता अपनी सफाई देते हुए बोला। "एक जंगली तोते के लिए चाँदी का एक सिक्का! अकाल के दिनों के लिए मुझे लेना पड़ा। लेकिन अगर कारी को ले कर मैं घर नहीं जा सका तो इस सिक्के का कोई फायदा नहीं होगा। इस अनजान समुद्री शहर में मैं खो गया हूँ। इतने सारे जहाज़, उन पर लदे हुए सामान, अजीब तरह की आवाज़ें, और समुद्र की लहरों की आवाज़ अलग से . . .।"

"मेरी माँ कारी को आपके साथ घर जाने के लिए राज़ी कर लेंगी," वेल्लुवर ने आश्वासन दिया। "अब जल्दी से घर चलिए। कुछ खा-पी लीजिए, ताकि दिन रहते घर के लिए रवाना हो सकें।"

"लेकिन यह कैसे हो सकता है?" कारी का पिता शंकित स्वर में बोला, "तुम्हारी माँ मेरे जैसे शिकारी और पहाड़ियों पर घूमने वाले जंगली को घर में क्यों घुसने देंगी?"

"घुसने देंगी," वेल्लुवर बोला। "जल्दी कीजिए, वह आपका

इंतजार कर रही हैं।"

वेल्लुवर कारी के पिता को लेकर पानी के एक सोते के पास पहुँचा। कारी के पिता ने हाथ-मुंह धोया, फिर दोनों पश्चिम दिशा में शहर की ओर चलने लगे। वेल्लुवर कारी के पिता को लगभग खींचता हुआ घर तक लाया। वेल्लुवर की माँ बाहर आयीं। उनके हाथ में कारी का हाथ था। "हम तुम्हारा इंतजार कर रहे थे," अपनी मधुर आवाज में उन्होंने कहा। "कारी ने केले के पत्ते काटकर पीछे बगीचे में रख दिये हैं। मैंने चावल, दही और काली मिर्च का पानी तैयार कर लिया है। तुम फौरन खाना खाने बैठ जाओ। फिर घर के लिए खाना ले जाना। कारी की माँ परेशान हो रही होंगी।"

कारी पिता के साथ खाने बैठ गया। वेल्लुवर और उसकी माँ ने परस-परस कर उन्हें जतन से खिलाया। वेल्लुवर लगातार बातें करता रहा, काले दुमुँहे पूंछवाले अजगर के बारे में तरह-तरह के सवाल पूछता रहा। कारी संक्षेप में जवाब देता जा रहा था। उसका पिता गूंगे की तरह चुपचाप खाना खा रहा था।

चलते समय कारी के पिता ने वेल्लुवर की माँ के पैर छुए।

"अंधेरा होने से पहले ही तुम लोग घर पहुँच जाओगे न?" माँ बोली। उसके स्वर में चिंता थी।

शिकारी का मौन भंग हुआ। "हमारे लिए चिंता न कीजिए। मेरे पास मशाल है। मैं उसे जला लूंगा। जंगली जानवर पास नहीं आयेंगे।"

पिता-पुत्र समुद्री कस्बे को खामोशी से पार करके कच्चे रास्ते पर आ गये।

"देखो, सफेद बगुले उड़कर बसेरे के लिए पेड़ों की ओर जा रहे हैं," कारी के पिता ने कहा।

"हम भी तो उन्हीं की तरह अपने घर जा रहे हैं," कारी बोला। एक हल्की सी मुस्कान उसके चेहरे पर तैर गयी।

इंडिया इन्टरनेशनल प्रैस, ए-12/1 नारायणा इन्डस्ट्रीयल एरिया फेस-I, द्वारा मुद्रित



रु. 14.00 ISBN 81-237-1092-5

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया